Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 05 30 मई, 2022 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

केंद्रीय पुलिस सेवाएं बनाम राज्य पुलिस सेवाएं यानी जैसे को तैसा

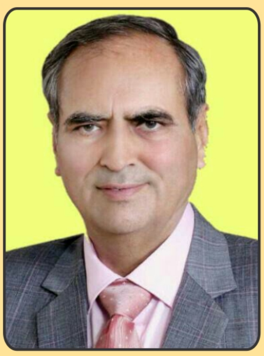

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राजनैतिक शह–मात के खेल में केन्द्रिय व पुलिस सेवाओं का सरे आम सत्ताहित के लिये उपयोग होने लगा है और राज्य पुलिस बलों का आपसी सक्रियता व तालमेल की बजाय राजनैतिक स्वार्थों के लिये उपयोग हो रहा है। जिसमें पुलिस तंत्र के नियम व सवैधानिक मर्यादा को दरकिनार कर देश व पुलिस सेवाएं जंगल राज की ओर बढ़ रही है जिसमें निर्दोष जनता बिना वजह पिस रही है और जिस की लाठी उस की भैंस वाला आलम बनने लगा है। राजनैतिक उठापठक के चक्र में हरियाणा में भी छूटपुट आतंकी घटनायें होने लगी है। हाल ही में करनाल में आतंकी घटना, लूटपाट व डकैती सरे आम हो रही हत्याओं की घटनाओं में भी राजनैतिक षड़यन्त्र की आशंका नजर आती है। केंद्रीय सरकार द्वारा निहित राजनैतिक स्वार्थ व हठधर्मी प्रतिष्ठा हेतु लगभग सभी गैर भाजपा प्रान्तों में विरोधियों को धमकाने व दबाने हेतु सुरक्षा एजेंसियों का इस्तेमाल किया जाने लगा है जिनके प्रति उत्तर में गैर भाजपाई मुख्यमंत्री भी राज्य पुलिस बलों को मनमाने ढंग से ढाल बना रहे हैं। यह फाईट बैंक एक स्थापित प्रतिष्ठा का पैटर्न बन रहा है जो आगे चल कर अधिक तीव्र हो सकता हैं।

पंजाब में भी आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद सिर उठाते आतंकवाद की वारदातें होने लगी हैं। बग्गा वाला मामला तो आपको याद होगा ही। केजरीवाल दिल्ली में भले ही सरकार चलाते हों लेकिन पुलिस उनके नहीं केंद्र सरकार के आधीन है। पंजाब एक संवेदनशील सींमाई प्रदेश हैं और कांग्रेस सरकार में तो प्रधानमंत्री की सुरक्षा के साथ चूक का मसला निपटा ही नहीं था लेकिन आम आदमी पार्टी की सरकार ने केंद्रीय पुलिस सेवाओं के सामने जिस तरह से पंजाब पुलिस को खड़ा कर दिया है उसके मायने समझना बहुत जरूरी हैं। पिछले दिनों भाजपा के फायर ब्रांड प्रवक्ता तेजिंदर बग्गा मामले में तीन–तीन राज्यों की पुलिस एक दूसरे से टकरा गई। इससे पहले शायद ही पूरे देश ने इस तरह का मामला देखा हो। बग्गा पर आरोप है उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री को धमकी दी है। छह मई को पंजाब पुलिस ने बग्गा को दिल्ली से उठा लिया था जो कोई बडी बात नहीं थी।

ये मामला तब तक बग्गा और पंजाब पुलिस के बीच ही रहा जब तक इसमें दिल्ली पुलिस और हरियाणा पुलिस भी शामिल नहीं हुई। दिल्ली पुलिस हरियाणा पुलिस की मदद से बग्गा को पंजाब पहुँचने से पहले ही उल्टा दिल्ली में ले आई। यानि पंजाब बनाम दिल्ली पुलिस और हरियाणा बनाम पंजाब पुलिस का पूर्णतया: राजनैतिक उपयोग करके कानून का जनाजा निकाला गया। ये मामला बाद में कोर्ट कचहरी भी पहुंचा लेकिन देश के नेताओं को ये याद रखना चाहिए कि पुलिस की वर्दी जिसके तन पर है वो देश के लिए काम करता है और इस ओछी राजनीति में उनको इस तरह से फंसाकर रखना देश के हितों व पुलिस के आपसी संबंधों में ऐसी गहरी खाई पैदा करता है जिसकी भरपाई हो पाना बेहद मुश्किल होगा। दो प्रदेशों के डीजीपी के बीच इस तरह के संबंधों में पुलिस कैसे अपना काम बेहतर कर पाएगी आप अंदाजा लगा सकते हैं। इसके लिए ना केवल सत्तारूढ भाजपा जिम्मेदार है बल्कि पंजाब में नई नई सरकार बनाकर फूले नहीं समा रही आम आदमी पार्टी भी जिम्मेदार है। पुलिस का बेजां इस्तेमाल करने से राजनीति शायद ही कभी चूकती हैं और आम आदमी पार्टी धीरे–धीरे करके कांग्रेस का आधार हथियाने में जिस तरह जुटी हुई है उससे भाजपा खुद भी परेशान हैं क्योंकि विकल्प तो विकल्प होता है।

सुरक्षा से जुडे मसले विशेषज्ञों के साथ साथ आम आदमी को भी परेशान करते हैं। पिछले दिनों पंजाब पुलिस ने कहा कि केजरीवाल पर आतंकवादी हमले का खतरा है? इसकी तह तक में जाने की जरूरत है क्योंकि दिल्ली पुलिस ऐसा क्यों नहीं महसूस करती है? दोनों ने आपस में क्या इनपुट शेयर किए हैं या किए भी हैं या नहीं क्योंकि ये केवल राजनीति नहीं बल्कि एक मुख्यमंत्री की जान से संबंधित सवाल है जिस पर किसी भी प्रकार की ओछी राजनीति से परहेज करते हुए यानि केंद्रीय पुलिस बनाम राज्य पुलिस की खतरनाक हथियार को त्याग करके पुलिस द्वारा निष्पक्ष जांच की आवश्यकता है।

बग्गा वाले मामले के तीन चार दिन बाद ही पंजाब में आतंकवाद से जुडी एक दूसरी खबर भी आई शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

जिस पर अभी सुरक्षा एजेंसियां जुटी हैं। पंजाब पुलिस की इंटेलिजेंस यूनिट के मुख्यालय परिसर में 9 मई की रात ग्रेनेड से हमले के बाद से राज्य में हाई अलर्ट है और पुलिस ने चंडीगढ़–मोहाली बॉर्डर को सील कर रखा है। पंजाब पुलिस ने इस ग्रेनेड अटैक को लेकर आतंकी साजिश का अंदेशा जताया था और ये अंदेशा बिल्कुल सही निकला है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने घटनाक्रम के बाद डीजीपी और अधिकारियों के साथ हाई लेवल बैठक कर सारी जानकारी ली थी लेकिन चीजें इतनी तेजी से बदल रही हैं कि बहुत कुछ परेशान करने वाला सा है। वास्तव में पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद कुछ अर्से में लगातार आतंकी घटनाये घटने लगी है जो कि पुलिस के लिये चुनौती के साथ–साथ सीमा पार व पंजाब प्रांत के पुराने आतंकवादी युग का आगाह करती है और इस घटनाक्रम में राजनैतिक द्वेष की बू आती है। जिसमें जन साधारण को राजनैतिक सत्ता परिवर्तन का अंजाम भुगतना पड़ेगा।

केंद्रीय सत्ता भाजपा द्वारा विरोधी सरकारों व सरकारी कामकाज पर प्रश्न करने वालों को प्रभावित करने हेतु "तीन शस्त्रीकरण" फार्मूला यानि पुलिस व जांच एजेंसियां, अनुकूल टेलिविजन चैनल तथा सोशल मीडिया में विस्तृत प्रचार एक रामबाण शस्त्र के तौर पर अपनाया जा रहा है जिनका उपयोग विरोधी दलों व जागरूक मतदाताओं को दबाने हेतु लगातार बढ़ रहा है। इसके प्रति उत्तर में विरोधी दलों की राज्य सरकारों द्वारा राज्यों में कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु राज्य सरकार के संविधानिक नियंत्रण के प्रावधान के कारण राज्य पुलिस व जांच एजेंसियों द्वारा केंद्रीय पुलिस सेवाओं को करारा जवाब दिया जाता है जोकि निम्न घटनाओं ने स्पष्ट उजागर होता है।

महाराष्ट्र में शिव सेना अध्यक्ष श्री उद्धव ठाकरे को भी सरकार के तीन अस्त्रों का अंश झेलना पड़ा और उसके युवा मंत्री पुत्र पर फिल्म अभिनेता सुशांत राजपूत की हत्या के षड्यंत्र के संगीन आरोप लगे। यह चर्चित मामला मीडिया की सुर्खियों में छाया रहा, जिसमें श्री उद्धव ठाकरे की संलिप्तता साबित करने की भरपूर कोशिश की गई और इस मामले को सीबीआई को जांच के लिये भेजा गया। इसके प्रति उत्तर में महाराष्ट्र सरकार द्वारा सुशांत राजपूत सहित कई अन्य संगीन मामलों को सीबीआई के दायरे से अलग कर दिया और तुरंत महाराष्ट्र विकास अघाड़ी (एमबीए) गठबंधन द्वारा सुशांत राजपूत के केश को प्रसारित करने वाले टीवी एंकर अर्नब गोस्वामी को गंभीर आरोपों में गिरफ्तार कर लिया। एंटीला (अंबानी आवास) केस में केंद्र सरकार द्वारा राज्य पुलिस पर दोबारा विफलता का आरोप लगाकर इस केस को राष्ट्रीय इंवेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) को सुपुर्द किया गया जिसके प्रति उत्तर में राज्य सरकार द्वारा दादरा एवं नगर हवेली के सांसद मोहन डालकर की हत्या में बीजेपी की संलिपता की जांच हेतु स्पेशल इंवेस्टीगेशन टीम गठित कर दी गई।

इससे उग्र होकर महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडनवीस ने सीनियर आईपीएस अधिकारी रश्मि शुक्ला की फोन टेपिंग जांच के आधार पर राज्य के अधिकारियों के विरूद्ध ट्रांसफर तथा पोस्टिंग के संबंध में रिश्वत के आरोपों की जांच की मांग उठाई थी। राज्य सरकार ने श्रीमति रश्मि शुक्ला पर अवैध फोन टेपिंग के आरोप लगाकर हाल ही में उस के विरूद्ध 700 पेज की चार्जशीट दायर की है।

सीबीआई तथा प्रवर्तन निदेशालय द्वारा महाराष्ट्र विकास अघाड़ी (एनवीए) गठबंधन के मंत्रियों श्री अनिल देशमुख तथा नवाब मलिक को निशाना बनाया गया है जबकि राज्य पुलिस द्वारा केंद्रीय मंत्री तथा पूर्व मुख्यमंत्री श्री नारायण राने को उद्धव ठाकरे को धमकी देने के आरोप में गिरतार किया गया तथा शिव सेना के एक सदस्य की शिकायत पर श्री राणे के लड़के, विधायक नितेश पर भी हत्या के प्रयास का केस दर्ज किया गया है।

इसी प्रकार पश्चिमी बंगाल में दिनेश त्रिवेदी को हराने वाले बीजेपी सांसद अर्जुन सिंह पर भटपरा नैहाती को–ऑपरेटिव बैंक का चेयरमैन रहते जाली वर्क–कॉन्ट्रैक्ट पर ऋण देने के भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत आरोप लगाये गये हैं। सितंबर 2020 में पश्चिमी बंगाल अपराध जांच विभाग द्वारा बीजेपी, सांसद जगननाथ सरकार के विरूद्ध सन् 2019 में हुई टीएमसी विधायक सत्यजीत बिश्वास को हत्या का केस दर्ज किया गया। इस केस में बीजेपी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुकुल राय को भी सह–षड्यंत्रकारी के तौर पर आरोपी बनाया गया है।

सितंबर 2021 में राज्य सीआईडी ने ममता बैनर्जी को राज्य चुनाव में हराने वाले विपक्ष के नेता श्री सुवेन्दु अधिकारी को अपने सुरक्षा गार्ड सुबाता चक्रवर्ती का कत्ल करने के जुर्म में नामजद कर आईपीसी की धारा 302 के तहत केस दर्ज किया। मार्च 2018 में राज्य पुलिस द्वारा

बीजेपी के टाप लीडर तथा राज्य इकाई के इंचार्ज श्री कैलाश विजयवर्गीय को "बाल ट्रैफिकिंग" केस में नामजद किया गया। मई 2021 में बीजेपी लीडर राकेश सिंह को कलकत्ता पुलिस द्वारा कोकीन केस में आरोपी बनाया गया। एक अन्य केस में बीजेपी कार्यकर्ता श्रीमति पामेला गोस्वामी को ड्रग आरोपों में जेल की गई जिसकी 292 दिन के बाद जमानत हुई।

राजनीतिक दांवपेच के खेल को भापते हुये राजस्थान में कांग्रेस वर्ष 2020 में केंद्र की शह पर श्री अशोक गहलोत की सरकार के साथ हुये विधायकों के दलबदल झमेले से सचेत हो गई और राज्य पुलिस स्पेशल आप्रेशन ने कांग्रेस विधायकों को लालच देकर दूर करने के आरोप में बीजेपी के दो कार्यकर्ताओं को आरोपित किया। बाद में केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र शेखावत को भी इसी प्रकार के आरोपों का सामना करना पड़ा। इसी तरह एक रोगी की मौत के आरोप के कारण एक महिला डॉक्टर द्वारा आत्महत्या करने के कारण बीजेपी नेता जितेन्द्र गोठवाल पर आत्महत्या के लिये उकसाने के आरोप दर्ज किये गये।

इसी प्रकार के केंद्रीय पुलिस एजेंसियों तथा राज्य पुलिस सेवाओं के मामले तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों में भी उजागर हुये हैं। जोकि सर्वथा केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा विरोधी दलों व सरकारों को प्रभावित करने के लिये बिना किसी मर्यादा व नियम को ताक पर रखकर किये जा रहे हैं। केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जांच एजेंसियों तथा पुलिस तंत्र के माध्यम से अपनाये जा रहे इस प्रकार के शह–मात के हथकंडे बिल्कुल जनहित के खिलाफ है और जनहित के मुद्दों से जनता को गुमराह करने की घटिया प्रक्रिया बन चुकी है।

वरिष्ठ पत्रकार शेखर गुप्ता के अनुसार 'देश में एक ज्यादा मुखर और लोकलुभावन विपक्ष उभर रहा है। ये विपक्ष आम आदमी पार्टी के रूप में उभरा है राजनीतिक नक्शे पर एक नजर डालने से साफ हो जाएगा कि कांग्रेस सत्ता में हो या न हो, वह केवल राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, हरियाणा, असम, हिमाचल प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में ही उल्लेखनीय जनाधार रखती है। इस साल के अंत में होने वाले हिमाचल प्रदेश और गुजरात के चुनावों पर नज़र रखने की जरूरत है क्योंकि 'आम आदमी पार्टी' अपनी ताकत दिखाएगी। उसने सूरत के पालिका चुनाव में अच्छा प्रदर्शन किया और गांधीनगर में 21 फीसदी वोट लेकर कांग्रेस (27.9 फीसदी वोट) की लगभग बराबरी कर ली। महाराष्ट्र में सहयोगी एनसीपी कांग्रेस के बूते बढ़त बना रही है। हरियाणा में कांग्रेस के संगठन में लगातार गड़बड़ी जारी है; राजस्थान में भीतरी असंतोष है और कोई नहीं जानता कि गुजरात में क्या हो रहा है सिवा इसके कि उसने वहां जिस युवा नेता को धूमधाम से नियुक्त किया था वह मन कड़वा करके बाहर निकल गया। अब विडंबना यह है कि भाजपा यह नहीं समझ पा रही है कि वह अपने पुराने दुश्मन के कमजोर पड़ने पर खुश हो या नये दुश्मनों के उभार को लेकर चिंतित हो। केन्द्रिय सता भाजपा को अपनी दूसरी सेकुलर प्रतिद्वद्धी ज्यादा शोर मचाने वाली, लोकलुभानवादी और आक्रमण 'आप' में सत्ता का विकल्प डराने लगा है। लेकिन, भाजपा कभी नहीं चाहेगी कि कोई विकल्प उभरे, चाहे वह कांग्रेस का ही क्यों न हो। भाजपा की काग्रेस मुक्त भारत की इच्छा तो लगभग पूर्ण हो चुकी है लेकिन 'आप' का उभरता ग्राफ, पश्चिमी बंगाल में तृणमूल, तामिलनाडु में डीएमके व महाराष्ट्र की शिव सेना से भी निपटना पडेगा और इसके लिये केंद्रीय पुलिस बनाम राज्य पुलिस बलो व राज्यों के प्रशासन तंत्र का मनमर्जी से इस्तेमाल किये जाने की सम्भावना है।

आज देश में तेजी से राजनीतिक परिस्थितियां बदल रही हैं और भाजपा परेशान है आम आदमी पार्टी को लेकर। कांग्रेस परेशान है आम आदमी पार्टी को लेकर और इस बीच में पुलिस की ताकत सबको चाहिए और इसने देश में पुलिस सेवाओं को ही आमने सामने खडा कर दिया है जो बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि वर्दी चाहे कोई भी पहना हो वो देश के लिए काम करता है। राजनेताओं को इनके बेजां इस्तेमाल से बचना चाहिए। पुलिस में सभी परिचालन पद राजनैतिक कार्यकारी के अधीन है और अधिकांश क्षेत्रों में सत्ताधारी कैडर पुलिस कार्यप्रणाली को मनमाने ढंग से प्रभावित करते हैं। अतः पुलिस नियुक्तियों, मनमानी गिरफ्तारियां, ईमानदार पुलिस कर्मियों के सम्मान, कानून के शासन को सुनिश्चित करने तथा प्रजातंत्र के सुरक्षित भविष्य आदि पर गहन विचार मंथन के लिये निरंतर विचार किया जाना चाहिए।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

महान सम्राट पोरस

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

इसी पुरुवंश में 326 ईस्वी पूर्व जाट राजा पोरस (पंवार) गोत्र से अत्यधिक प्रसिद्ध सम्राट् हुआ। इनका राज्य जेहलम और चिनाब नदियों के बीच के क्षेत्र पर था। "परन्तु इनके अधीन अन्य 600 राज्य थे तथा इन्होंने अपना राजदूत कई वर्ष ईस्वी पूर्व रोम (इटली) के राजा अगस्तटस (Augustus) के पास भेजा था।" (यूनानी प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्ट्रेबो का यह लेख है।

स्ट्रेबो का यह लेख ठीक ही प्रतीत होता है क्योंकि सम्राट् पोरस के समय भारत व आज के अरब देशों पर एक सम्राट् न था। परन्तु छोटे–छोटे क्षेत्रों पर अलग–अलग राजा राज करते थे। इनमें अधिकतर जाट राज्य थे। सम्राट् पोरस उन राजाओं से अधिक शक्तिशाली था।

यूनानी शक्तिशाली सम्राट सिकन्दर ने 326 ई० पूर्व भारतवर्ष पर आक्रमण किया। सिकन्दर की सेना ने रात्रि में जेहलम नदी पार कर ली। जब पोरस को यह समाचार मिला तो अपनी सेना से यूनानी सेना के साथ युद्ध शुरु कर दिया। दोनों के बीच घोर युद्ध हुआ। सिकन्दर के साथ यूनानी सेना तथा कई हजार जाट सैनिक थे, जिनको अपने साथ सींथिया तथा सोग्डियाना से भर्ती करके लाया था, जहां पर इन जाटों का राज्य था। पोरस की जाट सेना ने सिकन्दर की सेना के दांत खट्टे कर दिए।

युद्ध के दौरान जब पोरस और सिकन्दर आपस में लड़ रहे थे तो सिकन्दर घोड़े से गिर गया उसी क्षण जब पोरस ने सिकन्दर का वध करने हेतु अपनी तलवार से सिकन्दर की छाती में वार किया उसी क्षण सिकन्दर के चार सिपाही सिकन्दर को पोरस की तलवार के वार से बचा कर एकान्त स्थान पर ले गए। यदि सिकन्दर के सिपाही उसे वहां से उठाकर नहीं ले जाते तो सिकन्दर का पोरस के घातक वार से बचना मुशिकल था। उस समय सिकन्दर को मौत नजदीक से दिखाई दे गई और सिकन्दर ने पोरस से भयभीत होकर सन्धि करनी पड़ी। इस युद्ध में पोरस की जीत हुई थी न कि हार। कुछ अज्ञानी लोग पोरस की हार बताते है यह सर्वथा झूठ और तथ्यों से परे हैं। सिकन्दर की सेना में भी जाट सैनिक थे और सिकन्दर भी स्वयं कहता कि मेरे अन्दर भी जाट खून है क्योंकि सिकन्दर की माँ भी एक जाट क्षत्राणी थी। विश्व विजय का सपना तो दूर की बात थी। भारत वर्ष के एक छोटे से राज्य के राजा ने सिकन्दर का सपना चूर–चूर करा दिया था। सिकन्दर के बहुत से सैनिक थक कर चूर हो गए थे और काफी संख्या में बीमार पड़ गए थे और सिकन्दर के सामने वापसी की गुहार लगाने लग गए थे क्योंकि पोरस की सेना से लड़ते–2 यूनानी सैनिकों की हिम्मत टूट गई थी और इसके अलावा अन्य लड़ाई हेतू साहस नहीं जुटा पा रहे थे।

पोरस की हार लिखने वालों का खण्डन करते हुए "एनेबेसिस् ऑफ अलेक्जेण्डर" पुस्तक का लेखक, पांचवें खण्ड के 18वें अध्याय में लिखता है कि "इस युद्ध में पूरी विजय किसी की नहीं हुई। सिकन्दर थककर विश्राम करने चला गया। उसने पोरस को बुलाने के लिए एक दूत भेजा। पोरस निर्भय होकर सिकन्दर के स्थान पर ही मिला और सम्मानपूर्वक संधि हो गई।" सिकन्दर अत्यन्त उच्चाकांक्षी था किन्तु इस साढे–छः फुट ऊँचे पोरस जैसा कर्मठ और शूरवीर न था। सिकन्दर उसकी इस विशेषता से परिचित था, उसी से प्रेरित होकर उसने भिम्बर व राजौरी (कश्मीर में) पोरस को देकर अपनी मैत्री स्थिर कर ली। पोरस का अपना राज्य तो स्वाधीन था ही। अतः पोरस की पराजय की घटना नितांत कल्पित और अत्युक्ति मात्र है।

सिकन्दर चनाब नदी पार के छोटे पुरु राज्य में पहुंचा। यह बड़े पुरु का (पोरस का) रिश्तेदार था। इसके अतिरिक्त रावी के साथ एक लड़ाका जाति अगलासाई के नाम से प्रसिद्ध थी, इनको सिकन्दर ने जीत लिया। छोटे पुरु का राज्य भी सिकन्दर ने बड़े पुरु को दे दिया। रावी व व्यास के नीचे वाले क्षेत्र में कठ गोत्र के जाटों का अधिकार था। इनका यूनानी सेना से युद्ध हुआ। इन जाट वीरों ने यूनानी सेना को मुंहतोड़ जवाब दिया और आगे बढ़ने से रोक दिया। सिकन्दर ने पोरस से 5000 सैनिक मंगवाये। तब बड़ी कठिनाई के व्यास नदी तक पहुंचा। इससे आगे यूनानी सेना ने बढने से इन्कार कर दिया। इसका बड़ा कारण यह था – व्यास के आगे यौधेय गोत्र के जाटों का राज्य था। उनका शक्तिशाली यौधेय गणराज्य एक विशाल प्रदेश पर था। पूर्व में सहारनपुर से लेकर पश्चिम में बहावलपुर तक और उत्तर–पश्चिम में लुधियाना से लेकर दक्षिण–पूर्व में दिल्ली–आगरा तक उनका राज्य फैला हुआ था। ये लोग अत्यन्त वीर और युद्धप्रिय थे। इनकी वीरता और साधनों के विषय में सुनकर ही यूनानी सैनिकों की हिम्मत टूट गई और उन्होंने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। ऐसी परिस्थिति में सिकन्दर को व्यास नदी से ही वापिस लौटना पड़ा। भारत से लौटते हुए सिकन्दर ने जीते हुए सभी प्रान्त पोरस को दे दिये थे। वापसी में सिकन्दर की

सेना को सिन्ध व बलोचीस्तान के जाट राजाओं से भी लोहा लेना पड़ा। अलग–अलग जगहों पर हुए युद्धों में सिकन्दर को जाटों ने कई बार घायल किया। वापसी में सिकन्दर की सेना का मद्र, मालव, क्षुद्रक और शिव गोत्र के जाटों ने बड़ी वीरता से मुकाबला किया और सिकन्दर को घायल कर दिया। 323 ई० पू० सिकन्दर बिलोचिस्तान होता हुआ बैबीलोन पहुंचा, जहां पर 33 वर्ष की आयु में उसका देहान्त हो गया।

सिन्ध प्रान्त का राज्य फिलिप्स को सौंप दिया जोकि 6 वर्ष में ही मौर्या/मोर वंश के जाटों ने समाप्त कर दिया था।

India Emerging as Oral Cancer Capital, We definitely are not going to be proud of

Dr. Rajan Sahu,
Senior Consultant, Paras Hospital, Pkl

Oral cancer or mouth cancer is any malignant (cancerous) growth involving lips, inner lining of cheeks, floor of mouth, tongue, gingiva or hard palate. In India oral cancers account for 30% of all types of cancers. Higher incidence of oral cancer in our country is attributed to many etiological factors. Tobacco use, smokeless or smoking, is most common cause of this disease. Poor oral hygiene, viral infection like HP' alcohol consumption and chronic irritation are other important etiological factors. Incidence of oral cancer is more in states having higher consumption of tobacco. Tobacco use needs special mention here. Smoking and smokeless tobacco are equally to blame. Smokeless tobacco used in various forms like Betel quid(Pan), gutka, zarda, mawa, khaini are different forms of this harmful carcinogen prevalent in our country. It is more common in men than 'omen. Though cancers in general affect people in old age, oral cancers are seen in younger population because of habit of tobacco use. In India we encounter oral cancers at advanced stage of disease. Lesions usually are large in size and often involve multiple subsites of oral cavity. Treatment of such large lesions carry morbidity.

Treatment of oral cancers consists of one or more of these modalities surgery,(4 radiation and chemotherapy, Surgery plays a vital role in treatment especially in early stages of the disease.

Screening in high-risk groups, visual inspection by health care workers and self-examination are few methods to detect early lesions. Prevention is better than cure:

Abstinence from tobacco and alcohol, maintaining good oral hygiene, consuming fresh fruits and vegetables are ways to prevent development of oral cancers. Tobacco use should be discouraged at all levels. Endorsement of' tobacco products by celebrities should he condemned. A person has to be aware of his/her oral health, any non-healing ulcer needs to be investigated. Timely treatment can give good results with acceptable morbidity.

"The article is in accordance to personal Opinion of our esteemed writers."

Coal Induced Power Crisis in India

- R.N. MALIK

Whole of India faced unprecedented power crisis during the last week of April and first week of May. People faced long spells of power cuts. The situation in villages is still worse. The crisis still persists in villages but not that seriously in urban areas. This crisis was triggered by unprecedented heatwave during the end of April and first week of May. Then little showers brought much needed relief. A little cloudy weather was the result of the coming cyclone on the Andhra coast. The heatwave may generate at any time again. The power demand shot up 2.07 lakh MW which was also unprecedented at the fag end of April. The two main sources of power generation in India are thermal and hydropower plants. Wind and solar energy constitute only 13% of the total generation capacity. The installed capacity of 183 thermal power plants in India is 2.15 lac MW but actual generation is 1.4 lac MW. One MW of thermal power generating 24000 units consumes 15 tonnes of coal per day. So the generation of 1.4 lac MW of thermal power will require 21 lac tonnes of coal per day or roughly 650 million tonnes per year.

During Congress rule, Coal India Ltd.(CIL) produced only 450 million tonnes of coal per year and coal supply was rationed.As a result, private

power producers faced lot of coal crunch and had to run their plants at lower capacities and suffered heavy losses on that account. With the change of the government, Sh. Piyush Goel became the Minister for coal and he was able to give the desired thrust and impetus to the coal mining capacity of CIL after resolving some outstanding demands of CIL unions.As a result, the mining capacity attained a peak value of 650 million tonnes per year. With the change of Goel's portfolio, the mining capacity got reduced to some extent.

CIL adjusts it's mining capacity according to the monthly power demand and the two months spell of the rainy season when the mining capacity reduces to the minimum as a result of flooding of mines due to rainfall. So CIL creates a buffer stock to enable itself to supply coal to the power plants in synchronisation with the demand cycle.

This year, CIL stocked coal reserves considering the demand of coal that was actually lifted during the months of March-April last year. This year, the demand increased suddenly during these months because of unprecedented high temperatures during these months and CIL could not cope with the coal demand. Early arrival of summer also affected the yield of wheat by 30%.

There are other problems as well that were responsible for the delay in timely arrival of coal at thermal power plants. Firstly the power distribution companies (discomes) do not make timely payments of coal to the CIL. At present, they owe an amount of ? 1.3 lac crore to the power generation companies (gencos) and ?12300 crore to CIL. They also do not make timely payments for the freight charges to Indian Railways (IR) and therefore IR also does not provide enough wagons to CIL for transportation of coal though transportation of coal constitutes 80% of the total freight load and the main source of earning to IR. Simultaneously, wagons were also demanded by FCI for transportation of wheat. There are also two other serious bottlenecks for effective and timely transportation of coal to the thermal power plants. Firstly the loading process of coal is not efficient at the coal mines and needs modernisation urgently. The trains remain stranded for long times to get their turns for loading of coal. Secondly, large number of thermal power plants are located very far from the mining sites. Coal mines are located mostly in M.P. , Bihar,Jharkhand Bengal. For example, the thermal power plant at Khedar near Hissar is nearly 1300 kms from Asansol. The average speed of freight trains on busy routes is 25kms per hour. So the train will take nearly 55 hours to carry coal to the thermal power plant at Hissar. Last year, passenger trains were not running due to Covid pandemic. Consequently, the freight trains could carry coal to thermal power plants at an average speed of 50kms per hour. This year the Railway Ministry had to cancel the running of 600 passenger trains to provide free passage to freight trains and daily passenger's had to travel by buses by paying more fares.

The problem of erratic evacuation and transportation of coal to thermal power station has become an annual feature during summers, winters and sowing season of paddy that requires heavy irrigation by constant running of tubewells continuously from June to September. On the other hand, the excavation capacity of coal gets considerably reduced during the rainy season. Coastal states purchase coal from Indonesia, Malaysia and Australia. But the cost of coal increased 2.5 times due to war in Ukrain. These states also asked for coal from CIL. Now the government has asked these states to import coal at whatever rate it is available.

In order to mitigate the problem of coal Induced Power crunch (that has become an annual feature), both the states and the Power Ministry at the Centre, will have to make a paradigm shift in the existing policy of power generation. Firstly, the two sides have to realise the fact that transportation of coal at the required rate during peak load periods is not sustainable partly due to very long distances of power plants from the coal mines and secondly because Food Corporation of India (FCI) also needs large number of railway wagons round the year for transportation of foodgrains to the deficit states. This problem of transportation will be offset partly mitigated when Freight Corridors project is completed by 2025. Therefore the far off states should be asked to tap alternative sources of energy. The two alternate sources are hydro and solar power plants. Vast amount of hydropower potential remains untapped in Hill States like J&K, Himachal Pardesh, Uttrakhand, Sikkim, and Arunachal Pardesh. One lac MW of hydropower can be tapped from Brahamputra river valley alone. Therefore, the Central Power Ministry should

encourage and assist the power deficit states to collaborate with Hill states to launch joint venture projects to exploit the untapped hydropower potential. Likewise the States should be directed to pass legislation to direct urban residents to install rooftop solar power panels on residential, institutional, industrial and commercial buildings. A city of ten lac population can easily generate 2000 MW of solar power which is equivalent of 300MW of thermal power. This is because one MW of thermal power generates 24000 units where as one MW of solar power generates 4000 units. Rajasthan alone should set up mega power plants in the Thar desert and can generate 1.0 lac MW of solar power easily. If these states develop enough solar and hydropower, which they can easily do, to meet the requirement of peak load hours, then capacity of thermal power plants can be easily reduced by half and transportation of coal will not be a big problem. The government should also accelerate the work on the project of constructing two freight corridors where freight trains carrying coal will be able to run at a speed of 100 kms per hour. The Prime Minister has already commited at the Glasgow conference to replace thermal power plants by developing alternative sources of renewable energy by 2050. Sooner this replacement process of thermal power plants is started the better it would be and only then India will be truly Atamnirbhar in power generation in true sense of the word.

Crux:- The crux of the whole article is that Indian states and NTPC must reduce their dependence on coal fired thermal power plants by developing solar and hydropower energies which are available within the country in ample quantities.

वीर तेजा जी

वीर तेजा जी को भगवान शिव का ग्यारहवां अवतार माना जाता है और उसका जन्म एक नागवंशी जाट घराने में विक्रमी संमवत् 1130 माघ सुदी चौदस (29 जनवरी, 1074 ई०) में खरनाल में हुआ था। वीर तेजा जी राजस्थानी लोक देवता हैं और राजस्थान, यू.पी., एम.पी., गुजरात, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में देवता के रूप में इन्हें पुजा जाता है। राजस्थान का इतिहास बहुत सारी वीर गाथाओं और उदाहरणों से भरा पड़ा है जहां लोगों ने अपने जीवन और परिवारों को जोखिम में डाल दिया था और निष्ठा, स्वतन्त्रता, सच्चाई, आश्रम, सामाजिक सुधार आदि जैसे गौरव और मूल्यों को बरकरार रखा हैं। वीर तेजा राजस्थान के इतिहास के प्रसिद्ध महापुरूषों मं से एक थे।

वीर तेजा जी के पिता नागौर जिले के खरनाल गांव के मुखिया ताहड़ जी थे और उनकी माता का नाम रामकंवरिया जोकि किशनगढ़, अजमेर की प्रमुख थी। तेजा जी के माता व पिता दोनों भगवान शिव के उपासक थे। माना जाता कि माता रामकंवरी को नाग देवता के आर्शिवाद से वीर तेजा जी का जन्म हुआ था। जन्म के समय तेजा जी की काया इतनी मजबूत थी कि उन्हें तेजा बाबा का नाम दिया गया था। नागवंशी तेजा जी के बुजुर्ग उदयराज ने खरनाल पर अपना कब्जा कर अपनी राजधानी बनाया। इस परगने में 24 गांव थे। इनका विवाह झांझर गोत्र के जाट राजमल की पुत्री पेमल से हुआ था जो पनरे गांव के प्रमुख थे। इनका जन्म धौलिया गोत्र के जाट परिवार में हुआ था। इनका विवाह पुष्कर पुर्णिमा के दिन पुष्कर घाट पर ही हुआ था। पेमल के मामा का नाम खाजू काला था, जोकि धोला परिवार से दुश्मनी रखता था और इस रिस्ते के पक्ष में नहीं था। खाजू काला और ताहड़ देव के बीच विवाद पैदा हो गया। खाजू काला इतना कर गया कि उसे ताहड़ देव को अपनी तलवार से खाजू काला का वध करना पड़ा। इस अवसर पर तेजा जी के चाचा असकरन भी हाजिर थे। यह घटना पेमल की मां को ठीक नहीं लगी और ताहड़ देव व उसके परिवार से बदला लेने की सोचने लगी।

तेजाजी का विवाह बचपन में ही हो गया था और सुसराल पक्ष से दुश्मनी हो गई। इस बात का पता तेजा जी को जब लगा तब तेजा जी की मामी ने उन्हें ताना देते हुए कह दिया कि ऐसा है तो अपनी घरवाली को लाकर दिखा।

तभी वीर तेजा जी अपनी घोड़ी पर सवार होकर अपनी सुसराल पनरे गये। वहां किसी अज्ञानता के कारण सुसराल पक्ष से उनकी अनदेखी हो गई। जब नाराज तेजा जी वहां से वापिस लौटने लगे तब पेमल से उनकी प्रथम भेंट उनकी सहेली लाछा गुजरी के घर हुई। उसी रात लाछा गुजरी की गाएं मेर के मीणा चुरा ले गये। रास्ते में तेजा जी को एक सांप आग में जलता हुआ मिला तो उन्होंने उस सांप को बचा लिया लेकिन वह सांप जोडे से बिछुड़ने पर अत्यन्त क्रोधित हुआ और तेजा जी को डसने लगा। तब उन्होंने सांप को लौटते समय डस लेने का वचन दिया और सुसराल की ओर आगे बढ़े। लाछा की प्रार्थना पर वचनबद्ध होकर तेजा जी ने मीणा लुटेरों से संघर्ष कर लाछा गुजरी की गाय छुड़वाई। इस गोरक्षा युद्ध में तेजा जी अत्यधिक घायल हो गए थे। वापिस आने पर वचन

की पालना में सांच के बिल पर आए तथा पूरे शरीर पर घाव होने के कारण जीभ पर सांप से कटवाया।

किशनगढ़ के पास सुरसुरा में सर्प देश से उनकी मृत्यु भाद्रपंद शुल्क 10 संवत 1160 (28 अगस्त 1103 ई०) को हो गई थी तथा पेमल भी उनके साथ सती हो गई थी। उस सांप ने उनकी वचन बद्धता से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया। इसी वरदान के कारण तेजा जी भी सांपों के देवता के रूप में पूज्य हुए। गांव–गांव में तेजा जी के देवरे या थान में उनकी तलवारधारी अवश्रोही मुर्ती के साथ नाग देवता की मुर्ति भी होती है। इन देवरों के सांप के काटने पर जहर चूस कर निकाला जाता है तथा तेजा जी की तांत बांधी जाती है। तेजा जी निर्माण दिवस भाद्रपंता शुक्ल दसवी को प्रति वर्ष तेजा दशवी के रूप में मनाया जाता है। तेजा जी का जन्म धौलिया गोत्र के जाट परिवार में हुआ था। धोलिया शाषकों की वंशावली इस प्रकार है।

1. महारावल	2. भीमसेन	3. पीलपलजर
4. सांरगदेव	5. शक्तिपाल	6. रायपाल
7. धवलपाल	8. नयनपाल	9. धर्पणायाल
10. तक्कपाल	11. मूलसेन	12. रतनसेन
13. शुण्डल	14. कुण्डल	15. पिप्पल
16. उदयराज	17. नरपाल	18. कामराज
19. बोहितराव	20. ताहड़देव	21. तेजाजी

तेजा जी के बुजुर्ग उदय राज ने खरनाल को अपनी राजधानी बनाया। खरनाल परगने के 24 गांव थे।

तेजा जी के मन्दिरः–

तेजा जी के भारतवर्ष में अनेकों मन्दिर है। तेजा जी का मुख्य मन्दिर खरनाल में हैं। इनके मन्दिर राजस्थान, एम.पी, यू.पी., गुजरात, पंजाब, हरियाणा में हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री पी.एन. ओक का दावा हैं कि ताजमहल शिव मन्दिर हैं। जिसका असली नाम तेजो महालय है। आगरा मुख्यतः जाटों की नगरी हैं। जाट लोग भगवान शिव की तेजा जी के नाम से जानते है। The Illustrated Weekly of India के जाट विशेषांक (28 जून 1971) के अनुसार जाट लोगों के तेजा मन्दिर हुआ करते थे। अनेक शिवलिंगों में एक तेजा जी का निवास स्थल तेजो महालय था। श्री पी.एन. ओक अपनी पुस्तक Taj Mahal as a Hindu Temple Place में 100 से भी अधिक प्रमाण एवं तर्क देकर दावा करते हैं कि ताजमहल वास्तव में शिव मन्दिर है। जिसका असली नाम तेजो महालय है।

डर लगने वाले को हार्दिक आभार

– कमलेश भारतीय, पूर्व उपाध्यक्ष, हरियाणा ग्रंथ अकादमी

आखिरकार गुजरात के पाटीदार नेता व कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष हार्दिक पटेल ने कांग्रेस को पंजाब के सुनील जाखड़ की तरह गुड बॉय कह दी है। उदयपुर के नव संकल्प चिंतन शिविर के बाद हार्दिक दूसरे नेता हैं जिन्होंने कांग्रेस को गुड बॉय कहा है। हार्दिक पटेल पिछले एक माह से बराबर यह चेतावनी दे रहे थे कि मैं कांग्रेस में खुश नहीं हूं। कांग्रेस हाईकमान सोनिया गांधी से मीटिंग भी की लेकिन कोई हल नहीं निकला। आखिर अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा की नीतियों की प्रशंसा करते हुए पार्टी को अलविदा कह दिया। अभी कुछ दिन में एक क्रांतिकारी छवि वाला युवा नेता भगवाधारी हो जायेगा। राहुल गांधी ने कहा है कि 'डर' जाने वाले को हार्दिक आभार।

पिछले विधानसभा चुनाव में गुजरात में युवा नेताओं को साथ लेकर चलने में कांग्रेस को सफलता मिली थी। हार्दिक पटेल और जिग्नेश जैसे युवा नेताओं का साथ पा लिया था। अच्छा प्रदर्शन भी रहा लेकिन इन नेताओं को लगातार साथ जोड़कर नहीं रख पाई कांग्रेस। क्यों ? यह भी एक चिंतन शिविर का मुद्दा है। आखिर युवा नेता पार्टी में टिक क्यों नहीं रहे ? पंजाब में सुनील ने अलविदा कही। कहते हैं कि जैसे ही पार्टी ने नोटिस थमाया उनका मन खट्टा है गया और मन बना लिया कि छोड़कर चले जायेंगे और छोड़कर चले भी गये। अब हार्दिक पटेल भी चले गये। गुजरात के विधानसभा चुनाव से पहले यह किसी तगड़े झटके से कम नहीं। मानो या न मानो। पंजाब के सुनील और गुजरात के हार्दिक को लपकने के लिए भाजपा तैयार बैठी है। कुछ दिनों में ऐसी घोषणा हो भी सकती है। भाजपा को बैठे बिताये सफलता मिल रही है और कांग्रेस चिंतन शिविर के बाद भी चिंता में है।

हरियाणा में भी दिन प्रतिदिन अटकलें चल रही हैं कि कांग्रेस के कुलदीप बिश्नोई भी कांग्रेस छोड़ने के लिए पर तौल रहे हैं और हरियाणा प्रदेश कांग्रेस प्रभारी विवेक बंसल भी कहते हैं कि अभी कुलदीप बिश्नोई अवसाद में हैं और इसी अवसाद में वे कब कांग्रेस का साथ झटक जायेंगे, कोई नहीं जानता। आप में जाने की चर्चायें चल रही हैं और किसी भी दिन वे कांग्रेस को अलविदा कह देंगे कि आप हमारे हैं कौन ? इस तरह अभी कांग्रेस में टूट फूट जारी है और चिंतन शिविर की जरूरत है। अभी और चिंतन कीजिए।

बीस साल बाद का रीमेक बना रहे रणजीत चौटाला

फिल्म आई थी बीस साल बाद। सुपरहिट फिल्म। किसी ने इसका रीमेक बनाने की न सोची। पर हमारे हरियाणा के चौ रणजीत चौटाला ने घोषणा कर दी बीस साल बाद तक नहीं हिलेगी भाजपा न केंद्र में और न हरियाणा प्रदेश में। चौधरी साहब कमाल के राजनेता हैं। अपने परिवार की पार्टी को छोड़कर कांग्रेस में चले गये थे। राजीव गांधी के निकट होने के दावे करते रहे और मुख्यमंत्री बन जाने का सपना देखते रहे। राजीव गांधी के विदा हो जाने से न केवल चौ बीरेन्द्र सिंह बल्कि चौ रणजीत चौटाला का सपना टूट गया। अपनी अपनी राह पकड़ ली। घूम कर दोनों भाजपा में ही आ गये। अभी चौ बीरेन्द्र सिंह का तो मोहभंग होने लगा है लेकिन चौ रणजीत चौटाला पर भाजपा का भगवा रंग ज्यादा खिलने लगा है। वे पूरे जोश में कह रहे हैं कि बीस साल तक न केंद्र में और न ही हरियाणा भाजपा हिलने वाली नहीं है। कमाल के मंत्री। बिजली मंत्री ठहरे। करंट पूरा सै। झटका किसी को नहीं लगा क्योंकि यह सच नहीं होने वाला।

चौ रणजीत सिंह ने इससे आगे बढ़कर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा को भी सलाह दे दी है कि वे कांग्रेस पार्टी छोड़कर बाहर आ जायें। वहां उनका कोई सम्मान नहीं है। ऊपर सोनिया कांग्रेस है तो नीचे हुड्डा कांग्रेस है। वे अपने प्रयास से, संघर्ष से कुछ विधायकों को जीता कर ला सकते हैं लेकिन सरकार बनाने लायक विधायक नहीं होंगे। इस तरह बीस साल बाद फिल्म का मुहूर्त शॉट झज्जर में पत्रकारों की मौजूदगी में दे दिया। फिल्म का हश्र क्या होगा ?

जहां तक भाजपा की बात है कोई भी व्यक्ति भविष्यवक्ता नहीं होता। न रणजीत चौटाला और न ही प्रशान्त किशोर और न ही मैं। राजनीति संभावनाओं का खेल है। सभी जानते हैं और कहते भी हैं। पंजाब में आप और भगवंत मान को इतनी सफलता मिलेगी, किसने सोचा था ? उत्तर प्रदेश में योगी बम्पर सफलता के साथ लौटेंगे और किसान आंदोलन की हवा निकल जायेगी, किसने सोचा था ? उत्तराखंड में कांग्रेस मुंह की खाएगी, किसने सोचा था और एक हारा हुआ मुख्यमंत्री ही मुख्यमंत्री बना दिया जायेगा, किसके ख्यालों में था ? महाराष्ट्र में कभी शिवसेना व कांग्रेस मिल कर सरकार बनायेंगी, क्या किसी राजनीतिक पंडित ने सोचा था ? नहीं न। फिर चौ रणजीत चौटाला जी, ऐसी भविष्यवाणियों से कुछ नहीं होने वाला। आप राज्य में पूरी बिजली देने पर ध्यान दें तो ज्यादा अच्छा होगा। आप तो खुद पांच नम्बर पर विश्वास करते हो और हमारे हिसार में तो पांच तारीख को ही दर्शन देने आते हो। आपकी भविष्यवाणी आपको मुबारक लेकिन बीस साल की भविष्यवाणियां न ही करें तो बेहतर होगा। आप एक कुशल नेता हैं और अपनी भविष्य की राजनीति को तय कीजिए। इस तरह की बातों में कुछ नहीं रखा। आप तो अशोक तंवर के साथ भी चले थे। फिर क्या हुआ ? न अशोक तंवर और न आप ही कांग्रेस में रहे, किसी ने भविष्यवाणी की थी क्या ?

चिंतन शिविर के बाद बदलेगी कांग्रेस ?

तीन दिवसीय चिंतन शिविर उदयपुर राजस्थान में संपन्न। क्या इस तीन दिवसीय चिंतन या नव संकल्प शिविर से कांग्रेस में, इसकी कार्यशैली में कोई बदलाव आयेगा ? क्या कोई नयी उम्मीद की किरण फूटेगी ? क्या कुछ नया होने जा रहा है ?

बहुत से सवाल हैं इस शिविर को लेकर। चर्चा है कि एक परिवार, एक टिकट दिया जायेगा और यह भी चर्चा है कि पचास वर्ष तक ही चुनाव लड़ने की आयुसीमा कर दी जाये। यह भी चर्चा है कि महिलाओं को एक तिहाई टिकट और भागीदारी मिल सकती है। सोशल मीडिया आदि छह सूत्रीय कार्यक्रम बनाया गया है। इस तरह यह शिविर संपन्न हो गया। अध्यक्ष के बदलाव की कोई बात नहीं हुई। सिर्फ चर्चा भर रही। कोई ठोस बात नहीं हुई। फिर बदलाव कैसे होगा और कौन करेगा ? जी 23 समूह की मांग पर कोई चर्चा नहीं। नये नेताओं को कैसे सार्थक पहल पर लायेंगे ? क्या जिम्मेदारी देंगे युवाओं को ? नये को जिम्मेदारी नहीं और पुराने से जवाबदेही नहीं। कैसे चलेगा ? महिलाओं को नेतृत्व में कितना सम्मान मिलेगा ? जनांदोलन की बात उठी। जनांदोलन के लिए कौन आगे आयेगा ? जनांदोलन तो विरोध की राजनीति के लिए बहुत जरूरी हैं। फिर जो गुटबाजी ने हालत पतली कर रखी है, उस पर कौन अंकुश लगायेगा ? सुनील जाखड़ ने शिविर के उद्घाटन के दिन को ही चुना हाथ को झटकने के लिए। धर्मनिरपेक्ष चेहरे को हम कुछ दिनों में हिन्दूवादी चेहरे में बदलते देखेंगे। यह त्रासदी है कांग्रेस की। अपने पुराने नेताओं को भी मना नहीं सकती। पुराने परिवारों में भी इसकी कोई जरूरत नहीं रह गयी। अपनी कार्यशैली को बदलिये और सर्वहितकारी योजनायें बनाइए। हरीश रावत तो पंजाब का पूरा ही सवा सत्यानाश करके चलते बने। बाद में उत्तराखंड में वही हालात सामने आये और न कांग्रेस को जिता सके और न ही खुद जीत सके।

दिल्ली एक बार हाथ से निकली फिर वापस न मिली। बहुत कुछ सोचने योग्य है। विचार करने योग्य है। मंथन करने योग्य है। पश्चिमी बंगाल में वापसी नहीं हुई। गुजरात में हार्दिक पटेल को कोई उम्मीद नहीं रही। किसी दिन पार्टी छोड़ने की घोषणा आ जायेगी। बहुत कुछ विचार करने के दिन हैं।

बहुत कठिन दिन हैं कांग्रेस के।

हथियारों की होड़ शांति में बाधक

डॉ. एल. एस. यादव सम्प्रति विश्व के विभिन्न देशों में सैन्य क्षेत्र में एक दूसरे से अधिक ताकतवर बनने की होड़ लगी हुई है। दुनिया के जो भी बड़े देश हैं वे भी अपने को सैन्य क्षेत्र में इतना अधिक शक्तिशाली बनाना चाहते हैं कि कोई देश उन पर आक्रमण करने से पहले अनेक बार विचार करे। ताकतवर राष्ट्र बनने की इस होड़ में वैश्विक सैन्य खर्च सर्वकालिक उच्च स्तर 2.1 ट्रिलियन डॉलर यानि कि लगभग 160 लाख करोड़ रुपये से अधिक तक पहुंच चुका है। देखा जाए तो लगातार सात वर्षों से वैश्विक स्तर पर सैन्य खर्च में बढ़ोत्तरी हो रही है। स्वीडन की प्रख्यात संस्था स्टाकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट ; एसआईपीआरआई की 25 अप्रैल को जारी की गई ताजा रिपोर्ट में जानकारी दी गई है कि वर्तमान में सबसे अधिक सैन्य खर्च करने वाला देश अमेरिका है। इसके बाद चीन दूसरे नम्बर पर और भारत तीसरे नम्बर पर है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि चीन का सैनिक खर्च भारत के मुकाबले तकरीबन चार गुना अधिक है। इसके बाद ब्रिटेन चौथे नम्बर पर व रूस पांचवे स्थान पर है। इन पांचों देशों का कुल सैन्य खर्च विश्व के कुल सैन्य खर्च का 62 प्रतिशत है, बाकी 38 प्रतिशत में दुनिया के अन्य देश हैं।

उपर्युक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि कोविड–19 महामारी के बीच भी विश्व का सैन्य खर्च रिकॉर्ड स्तर तक बढ़ा है। सिपरी के सैन्य व्यय और शस्त्र उत्पादन कार्यक्रम के वरिश्ठ शोधकर्ता डॉ. डिएगो लोप्स डा सिल्वा का कहना है कि वर्ष 2021 में मुद्रास्फीति के कारण वास्तविक विकास दर में मंदी थी, जबकि सैन्य खर्च में 6.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। कोविड महामारी से आर्थिक सुधार के परिणामस्वरूप रक्षा खर्च वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 2.2 प्रतिशत था जबकि 2020 में यह आंकड़ा 2.3 प्रतिषत था। अमेरिका ने वैश्विक सैन्य खर्च में पहले स्थान पर रहकर वर्ष 2021 में 801 बिलियन डॉलर खर्च किए लेकिन उसका यह खर्च वर्ष 2020 की तुलना में 1.4 प्रतिशत कम है। अमेरिका ने वर्ष 2012 से 2021 तक के दस वर्षों में सैन्य अनुसंधान एवं विकास के लिए धनराषि में 24 प्रतिशत की वृद्धि की और हथियारों की खरीद पर खर्च में 6.4 प्रतिशत की कमी की। वैसे अमेरिका अभी भी अगली पीढ़ी की नई सैन्य तकनीकों का विकास कर रहा है।

दूसरे स्थान पर रहने वाले चीन ने अमेरिका की तुलना में सैन्य खर्च में वृद्धि की। उसने वर्ष 2021 में 293 बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च किए जो कि वर्ष 2020 की तुलना में 4.7 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2012 से 2021 तक की अवधि में चीन अपने रक्षा बजट में 72 प्रतिशत का इजाफा कर चुका है। यहां गौरतलब बात यह भी है कि रक्षा बजट के मामले में चीन अभी भी अमेरिका से काफी पीछे है, लेकिन चीन अमेरिका के बाद रक्षा पर सबसे अधिक खर्च करने वाला दूसरा देश बन गया है। अमेरिका का रक्षा बजट चीन के मुकाबले अभी भी लगभग चार गुना ज्यादा है। अमेरिका ने वर्ष 2021 के लिए अपना रक्षा बजट 740 अरब डॉलर यानी कि लगभग 54 लाख करोड़ रुपये घोषित किया था। चीन का अमेरिका के साथ सैन्य एवं राजनीतिक तनाव बढ़ता ही जा रहा है। शायद इसीलिए चीन के रक्षा बजट ने पहली बार 209 अरब डॉलर के आंकड़े को पार कर दिया है। तीसरे स्थान पर रहने वाले भारत का सैन्य खर्च वर्ष 2021 में वृद्धि के बाद भी 76.6 बिलियल अमेरिकी डॉलर रहा जो कि 2020 की तुलना में 0.9 प्रतिशत ज्यादा था। स्टॉकहोम स्थित संस्थान के अनुसार भारत का यह खर्च 2012 की तुलना में 33 प्रतिशत ज्यादा था। ज्ञातव्य है कि भारत ने स्वदेशी हथियार उद्योग को मजबूत करने के लिए वर्ष 2021 के सैन्य बजट में 64 प्रतिशत पूंजीगत परिव्यय घरेलू रूप से उत्पादित हथियारों के लिए निर्धारित किया था। भारत चार साल पहले पांचवे स्थान पर था और तब उसका सैन्य खर्च 5.1 लाख करोड़ रुपये था। चीन जैसी शक्तियों से निपटने के लिए भारत लगातार अपनी सामरिक शक्ति को बढ़ाने में लगा हुआ है। वर्तमान में चीन के बाद भारत के पास ही सबसे बड़ी सेना है। देश में हथियारों के उत्पादन को तेज करने के लिए भारत सरकार ने बड़े सैन्य बजट का ऐलान किया था। अब हथियारों के निर्माण में आत्मनिर्भर बनने के लिए भारत अधिक धन खर्च कर रहा है।

भारत के संदर्भ में गौरतलब बात यह है कि चीन और पाकिस्तान के साथ लगती सीमाओं पर लगातार विवादों के चलते रहने के कारण उसकी प्राथमिकता यह है कि वह अपनी सेनाओं के आधुनिकीकरण और हथियारों के उत्पादन के मामले में मजबूत हो जाए। इसीलिए वह रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है और घरेलू रक्षा उद्योग को बढ़ावा दिया जा रहा है। अभी हाल ही में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 21 अप्रैल को सेना के कमांडर सममेलन को संबोधित करते हुए कहा कि चीन के साथ एलएसी विवाद का शांतिपूर्ण समाधान निकालने के लिए बातचीत लगातार जारी है और इसी से एलएसी पर तनावग्रस्त इलाकों से सेनाओं की वापसी हो

सकेगी। भारत की सशस्त्र सेनाएं देश की अखण्डता की रक्षा करने के लिए चुनौतीपूर्ण हालातों में दुश्मन की हर प्रकार की चुनौती से निपटने हेतु पूरी मुस्तैदी से डटी हुई हैं।

चौथे स्थान पर रहने वाले ब्रिटेन ने वर्ष 2021 में सैन्य क्षेत्र पर 68.4 अरब डॉलर खर्च किए जो 2020 की तुलना में तीन प्रतिशत ज्यादा रहा। वर्ष 2021 में सैन्य क्षेत्र पर 65.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च करने वाला रूस पांचवें स्थान पर है। उसका यह सैन्य खर्च वर्ष 2020 की तुलना में 2.9 प्रतिशत ज्यादा था। रूस ने काफी पहले से ही यूक्रेन सीमा पर अपनी सेना को गतिषील कर रखा था। यह उसके विशेष सैन्य विकास का लगातार तीसरा वर्ष था। इस दौरान रूस का सैन्य खर्च उसके जीडीपी का 4.1 प्रतिशत तक पहुंच गया। बीते वर्ष ऊर्जा की कीमतों की बढ़ोत्तरी ने उसके सैन्य खर्च को बढ़ाने में सहायता की। इसके अलावा कतर, ईरान और यूक्रेन भी सैन्य खर्च बढ़ाने में आगे रहे। वर्ष 2021 में कतर का सैन्य खर्च 11.6 अरब डॉलर था। कतर मध्य पूर्व में पांचवां सबसे अधिक रक्षा पर खर्च करने वाला देश बना। 11 वर्षों में उसका सैन्य खर्च 434 फीसदी बढ़ा। ईरान का सैन्य खर्च चार साल में पहली बार बढ़कर 24.6 अरब डॉलर हो गया। उसने वर्ष 2021 में अपना सैन्य खर्च 14 फीसदी तक बढ़ाया। यदि यूक्रेन की बात की जाए तो उसने वर्ष 2021 में अपनी जीडीपी का 3.2 प्रतिशत रक्षा पर खर्च किया। इसके अलावा भी कई देश अपना सैन्य खर्च बढ़ाकर विश्व शांति को चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं। उपर्युक्त विवेचन यह स्पष्ट करता है कि पूरी दुनिया सैन्य खर्च के द्वारा बढ़ते संहारक हथियारों के कारण महाविनाश के लिए तैयार बैठी है। विश्व में कई देश ऐसे हैं जिनके बीच वर्तमान में ऐसा तनाव है जो कभी भी युद्ध में तब्दील हो सकता है। इसलिए विश्व के प्रमुख देशों को चाहिए कि दुनिया में फैली तनावपूर्ण स्थितियों को समाप्त कर विश्व शांति की तरफ आगे बढ़े जिससे महाविनाश की स्थितियों को टाला जा सके।

(लेखक सैन्य विज्ञान विषय के प्राध्यापक रहे हैं।)

जाट, जट, जुट JAT, JAAT, JUT जाटों के गोत्र

दुनिया भर में अनेक देशो मे बसे कई करोड़ों जाट हैं, व उनके हजारो गौत्र है ,तो सारे देशों के जाटों की गोत्र पता लगाना लगभग असंभव है, पर फिर भी जिस देश से जाट दुनिया भर में फैले हैं,उस भारत देश के जाटों की सारे गौत्र को लिखने का मैंने प्रयास किया है, हो सकता है जाट भाइयों ज्यादा भी नहीं तो कम से कम अपने गाँव की सारी गोत्र जरूर चैक कर लेना गोत्र सही है, या नहीं है। अगर कोई गोत्र छुट गई हो तो उस गोत्र के बारे में कमेंट में बताकर इस लिस्ट में जोङने में मदद जरूर करना.......

जाटों के गोत्र इस प्रकार हैं......

Aanjan, Abara, Abhir, Abhoria, Abra, Abuda, Achahal, Achal, Acharya, Achashwa, Achra, Ad, Ada, Addhav, Adhari, Adhran, Adhwal, Ading, Aechra, Afridi, Agach, Agah, Agha, Agi, Agre, Agrohe, Ahera, Ahervanshi, Ahi, Ahir, Ahlania, Ahlawat, Aichra , Ail, Air, Airavat, Ajdolia, Ajlan, Ajlan, Ajli, Ajmedia, Ajmeria, Ajra, Aka, Aki, Akodia, Akodiya, Alamat, Alawalpuri, Aligi, Alun, Alune, AlwalAmbasht, AmeriaAmia, Amla, Amodia, Anana, Anav, Anchatwal, Anchla, Anchra, Andar, Andari, Andhak, Andhala, Andhar, Andhara, Andhi, Andhra, Andhrana, Ando, Anga, Angyara, Anjal, Anjan, Anjana, Anjane, Anjia, Anjna, Anjre, Anjuria, Anna, ansu, Antal, Antas, Antil, Anwla, Aohre, Aparajit, Apt, Arab, Arabi, Arain, Arak, Aratt, Arbal, Archi, Arh, Ark, Arkhar, Arki Arkonchi, Aror, Arora, Artat, Arthwal, Artiman, Arya, Aryak, Ashwatar, Asi, Asiagh, Asit, Aslana, Asrodh, Asunda, Atal, Atam, Atariwachal, Atawat, Athwal, Atoman, Atra, Atri, Atrish, Attwal, Atval, Atwal, Audhran, Aujhlan, Aujjihan, Aulakh, Aulana, Aulukya, Ausu, Avalak, Avara, Avra, Avrah, Avyay, Ayahat, Baagaria, Baagariya, Babal, Babbar, Babhu, Bachak, Bachhada, Bachhal, Bad, Badaala, Badainch, Badak, Badala, Badechha, Badesara, Badeta, Badgoti, Badgujar, Badhala, Badhaunia, Badhauniya, Badhautia, Badhawa, Badhel, Badhet, Badhotia, Badhran, Badhwan, Badi, Badiasar, Badiya, Badiyar, Badiyasar, Badmasar, Badonda, Badrain, Badran, Badrawat, Badraya, Badsar, Baduha, Badvar, Badwal, Badwan, Badwar, Bag, Bagaariya, Bagada, Bagadia, Bagara, Bagara, Bagara, Bagari, Bagaria, Bagariya, Bagaroiya, Bagarwa, Bagdawat, Bagdi, Bageria, Bageriya, Baghad, Bagod, Bagor, Bagra, Bagrawat, Bagri, Baharwan, Bahik, Bahika, Bahinwar, Bahinwar, Bahubal, Bainda, Bains, Bainsa, Bairad, Baiswar, Baj, Baja, Baja, Bajad, Bajari, Bajauta, Bajdolia, Bajdolya, Bajia, Bajiya, Bajolia, Bajraula, Bajrolia, Bajwa, Bajya, Bajya, Bajyar, Bakaiya, Bakhar, Bal, Bal, Balabhadra, Baladwal, Balaria, Balarwal, Balarya, Balauda, Baldawa, Bale, Balhara, Balhara, Balia, Balihara, Baliya, Baliyan, Ball, Baloda, Baluda, Balunda, Balwada, Balwar, Balya, Balyan, Balyan, Bamal, Bamar, Bambal, Bamboria, Bambu, Bamel, Bamil, Bamir, Bamraulia, Bamwala, Bana, Banaga, Banatari, Banati, Bandar, Bandhu, Bangad, Bangadwa, Bangamwar, Banganwa, Bangar, Bangare, Bangarwa, Bangarwar, Bangewala, Bangra, Banhbal, Banjh, Bankure, Banrawar, Bans, Bansi, Bansman, Banta, Banto, Banwala, Bapar, Bapedia, Baperia, Baperiya, Bar Rawat, Bar, Bara, Barach, Barad, Barada, Barahi, Barak, Barak, Barala,

Barale, Barale, Baram, Barar, Barasingh, Baraulia, Barauliya, Barayli, Bardak, Bare, Bareda, Bareta, Barga, Bargo, Bargoti, Bargujar, Bargujar, Bari, Bariyala, Bariyasar, Barjati, Barkia, Barla, Barnanga, Barojwar, Barol, Barol, Barolia, Barolia, Baronda, Barra, Barrawat, Barsara, Barwadwal, Barwal, Barwan, Barwar, Barwar, Basar, Basath, Basatia, Basatiya, Basda, Basera, Basman, Basra, Bassi, Bast, Baswan, Baswan, Baswana, Batan, Batar, Batare, Batawal, Batdhan, Bater, Batesar, Bath, Batian, Batra, Bauhara, Bauhra, Baulya, Baupchya, Baval, Bavana, Bavar, Bavaria, Bawal, Bayala, Bazaad, Bazia, Bazia, Bebla, Beda, Bedasar, Bedian, Beejlan, Beerda, Behal, Behda, Behra, Belari, Belwal, Benas, Benda, Benhival, Beniwal, Benra, Benta, Bera, Berda, Beria, Berwal, Berwal, Bhaado, Bhabharia, Bhabhawa, Bhad, Bhada, Bhadadalani, Bhadadara, Bhadadeya, Bhadala, Bhadara, Bhadaulani, Bhadauria, Bhadawar, Bhadia, Bhadial, Bhadiar, Bhadiasa, Bhadiya, Bhadiya, Bhadiyal, Bhadiyar, Bhadiye, Bhadkasana, Bhadrecha, Bhadu, Bhadu, Bhadvaria, Bhagal, Bhagasra, Bhagat, Bhagaur, Bhagel, Bhagod, Bhagod, Bhagor, Bhagotar, Bhagu, Bhainwal, Bhaira, Bhaju, Bhakal, Bhakar, Bhakhar, Bhakkar, Bhal, Bhalan, Bhale Sultan, Bhaliya, Bhalothia, Bhalotia, Bhalotiya, Bhama, Bhamal, Bhambhoo, Bhambhu, Bhambu, Bhamu, Bhan, Bhanbhu, Bhandechhe, Bhangal, Bhangiwall, Bhangu, Bhani, Bhankal, Bhankar, Bhanmu, Bhanmu, Bhannu, Bhanoda, Bhanvaria, Bhanveria, Bhanwala, Bhanwaria, Bhanwariya, Bhanwarkia, Bhanwarkiya, Bhar, Bhara, Bharaiya, Bharangar, Bharangar, Bharangur, Bharani, Bharanwar, Bharashiva, Bharathdwaj, Bharbhu, Bhardwaj, Bhardwar, Bhare, Bhargote, Bharhaich, Bhari, Bhari, Bhariya, Bhariyan, Bharkaulia, Bharkauliya, Bharkoot, Bharkut, Bharuka, Bharwania, Bharwar, Bharwaria, Bhaskar, Bhaskar, Bhat, Bhataiya, Bhatara, Bhataunia, Bhatauniya, Bhati, Bhatoo, Bhattal, Bhatti, Bhatu, Bhaubhia, Bhauhar, Bhaumu, Bhavralia, Bhavraliya, Bhayan, Bheda, Bheel, Bheenchar, Bhenada, Bhendi, Bhenron, Bhenwar, Bher, Bhichar, Bhidasra, Bhidhan, Bhilaye, Bhimbhrauliya, Bhinchar, Bhind, Bhinda, Bhindar, Bhinwar, Bhitarwal, Bhitwana, Bhitwar, Bhiu, Bhobia, Bhodiyan, Bhogiyan, Bhoj, Bhokhda, Bhole, Bhooker, Bhoori, Bhooria, Bhoosania, Bhorang, Bhoria, Bhoruka, Bhota, Bhuchchar, Bhudiya, Bhuiya, Bhukar, Bhukar, Bhuker, Bhular, Bhule Multan, Bhumiva, Bhunwal, Bhuplaan, Bhupran, Bhuprat, Bhuradi, Bhuri, Bhuria, Bhura, Bhuriya, Bhusania, Bhusaniya, Bhuthiya, Bhuwada, Bhuwal, Bhuwanda, Bhyan, Bichhu, Bidaria, Bidariya, Bidasar, Bidasaria, Bidasariya, Bidaurwaria, Bidaurwariya, Bidiyasar, Bihal, Bijarania, Bijasania, Bijasaniya, Bijlan, Bijolia, Bijor, Bijrania, Bijwari, Bikarwal, Bikrav, Biloda, Bilvan, Bilwan, Binda, Binner, Birakh, Birala, Birang, Birda, Birdwal, Birharu, Birhman, Birk, Bisarnia, Bisarniya, Bisauthia, Bisayati, Bisayti, Bisla, Bisla, Bisonia, Bisothia, Bissu, Bisu, Biswa, Biswal, Bizarnal, Bochalya, Bochalya, Bodh, Bodha, Bodian, Bodiya, Bodiyan, Bodya, Bogdawat, Boh, Bohra, Bola, Bolan, Boora, Boori, Boparai, Boparay, Borana, Bordak, Bosle, Bovas, Bovasia, Brahma, Brahmayan, Brar, Brehbhan, Bring, Budajia, Budania, Budaniye, Budhe, Budhrain, Budhrayan, Budhwar, Budhwar, Budia, Budia, Budila, Budiya, Budiyan, Budyan, Bugalia, Bugaliya, Bugasara, Buladiya, Bulariya, Buldak, Buliyo, Bura, Burdak, Bure, Buri, Buria, Buriya, Burrak, Burzia, Butar, Buvakia, Buvakiya, Byamal, Chabbarwal, Chabhar, Chabuk, Chacha, Chachad, Chachar, Chachhan, Chachhan, Chadda, Chadhari, Chagal, Chaghori, Chagna, Chahad, Chahal, Chahar, Chaharag, Chahil, Chahiyan, Chail, Chaj, Chaji, Chakal, Chakara, Chakora, Chalawaria, Chaliky, Chalka, Chalkar, Chaluky, Chaluky, Chalukya, Chamad, Chamar, Chamkane, Chanan, Chanav, Chanchal, Chand, Chandad, Chandan, Chandar, Chandaur, Chandawat, Chandel, Chandele, Chandelia, Chandhari, Chandhari, Chandi, Chandiwal, Chandravanshi, Chandrayan, Chandwa, Chandwal, Chanekar, Chang, Changal, Changari, Chankar, Chano, Chapoo, Chapotkat, Chapu, Char, Charaj, Charaka, Charani, Charave, Charavi, Chari, Charia, Chariya, Charka, Chat, Chatak, Chatar, Chatar, Chatta, Chattha, Chatthe, Chatur, Chaudahrana, Chaudharana, Chaudhari, Chaudhary, Chauhan, Chaujaria, Chaujariya, Chaukar, Chaul, Chaula, Chaululik, Chaundiyan, Chaupda, Chaupra, Chauras, Chaurat, Chautia, Chavan, Chavel, Chavuk, Chawan, Chawda, Chawel, Chawra, Chebuk, Chedi, Cheelar, Cheema, Cheemni, Cheena, Chekitan, Cheval, Chevku, Chhaba, Chhabain, Chhabarwal, Chhachhar, Chhachharwal, Chhadang, Chhag, Chhaga, Chhan, Chhandla, Chhangar, Chhapara, Chhaparia, Chharang, Chharot, Chhatarwal, Chhaunkar, Chhaunkare, Chhauyal, Chhava, Chheelar, Chheena, Chhel, Chhidang, Chhidar, Chhikara, Chhikara, Chhilar, Chhiller, Chhilwal, Chhim, Chhimba, Chhina, Chhinkar, Chhirang, Chhirus, Chhitar, Chholet, Chhonkar, Chhonkara, Chhoorus, Chhotia, Chhotiya, Chhoyla, Chhuhan, Chhuran, Chigad, Chikara, Chikati, Chikora, Chilar, Chilka, Chilka, Chilkha, Chima, Chimni, Chinar, Chirewale, Chitan, Chitaria, Chitariya, Chitha, Chitraoda, Chitraora, Chitrawda, Chittha, Chityan, Chivulak, Choaul, Chohari, Chokra, Choluky, Chondhar, Chopda, Chopra, chopar Chotiya, Chotya, Choudhari, Choudhary, Choundiyan, Chova, Choyal, Chudiwar, Chuhad, Chuhan, Chuhar, Chukni, Chukrani, Chulha, Chulhe, Chulug, Chulukya, Chundiwal, Churail, Churania, Chusia, Chusiya, Chuthan, Chuttan, Daahil, Daar, Daara, Dabaria, Dabas, Dabh, Dabhdhil, Dabisa, Dabla, Dabola, Dachhwal, Dadad, Dadak, Dadan, Dadar, Dadarwal, Dadharia, Dadhariya, Dadiye, Dadona, Daga, Dagal, Dagar, Dagare, Dage, Dager, Dagia, Dagiya, Dagoliya, Dagor, Dagora, Dagur, Dahal, Dahal, Dahala, Dahan, Dahar, Daharaya, Daharwal, Daharwar, Dahaye, Dahelia, Dahi, Dahia, Dahil, Dahima, Dahima, Dahin, Dahir, Dahiya, Dahula, Dahuna, Dahuna, Dahwa, Dairwal, Daiya, Daker, Dakere, Dakia, Dakiya, Dakor, Dalal, Dalan, Dalat, Dalawa, Dalera, Dalf, Dalgi, Dalji, Dalka, Dalphod, Daluja, Damal, Damara, Damas, Danaki, Danal, Danda, Dandakh, Dandal, Dandasa, Dandiwal, Dandyan, Dang, Danga, Dangar, Danghad, Danghar, Dangi, Dangi, Dangiwal, Dania, Daniwal, Dans, Dantarwal, Danuya,

Danya, Dapoti, Dar, Dar, Dara, Dara, Darad, Darad, Darag, Daraiya, Darakha, Daral, Darar, Darawar, Dargotiya, Dariye, Darodiya, Darotha, Darotiya, Daroya, Darran, Darude, Darv, Darva, Darvan, Darwal, Daryan, Dasania, Dasaniya, Dasaniya, Dashae, Dasharn, Dashet, Dashpuria, Dashpuriya, Daspuria, Daspuriya, Dater, Dathaunia, Datherwal, Dathure, Datle, Dattasulia, Daukiya, Daulat, Daulta, Dauneria, Dava, Davadaria, Davagah, Davagar, Davalan, Davali, Davalot, Davar, Davar, Davaria, Davas, Dawa, Dawan, Dawana, Dawar, Dawas, Daya, Dayal, Dayal, Dayaria, Dedar, Dedi, Dedu, Dedwal, Deedal, Deedil, Deeghalia, Deegharia, Deeghwar, Deegrana, Deelwal, Deg, Degra, Dehat, Dehdu, Dehiya, Dehlan, Dehru, Dela, Delai, Delak, Delkar, Deloo, Delu, Denavia, Denaviya, Dendi, Dengri, Dengri, Deol, Deosar, Der, Deru, Desali, Deshwal, Desiwal, Deswal, Deswali, Deu, Dev, Devachh, Deval, Deval, Devanda, Devate, Devatra, Devavanda, Devli, Devyali, Dhaamal, Dhadal, Dhadaria, Dhadheri, Dhadi, Dhadiwal, Dhagad, Dhagada, Dhagar, Dhagara, Dhagori, Dhai, Dhainyar, Dhaka, Dhakal, Dhakania, Dhakapur, Dhakar, Dhakar, Dhakare, Dhakarwal, Dhakawal, Dhakkarwal, Dhal, Dhal, Dhala, Dhalam, Dhalan, Dhaliwal, Dhaliwal, Dhall, Dhallu, Dhalwal, Dhama, Dhamal, Dhaman, Dhami, Dhamora, Dhan, Dhana, Dhana, Dhanaria, Dhanariya, Dhanasar, Dhanch, Dhanchak, Dhanda, Dhandha, Dhandhe, Dhandhi, Dhandhus, Dhandhwal, Dhandi, Dhandial, Dhandlan, Dhandoi, Dhandola, Dhandu, Dhaneraya, Dhanger, Dhani, Dhani, Dhania, Dhaniwal, Dhaniya, Dhankar, Dhankar, Dhankhar, Dhanoha, Dhanoi, Dhanoye, Dhanuk, Dhanuria, Dhanuriya, Dhanwar, Dhapar, Dhar, Dhara, Dharan, Dharana, Dharana, Dharang, Dharania, Dharatwal, Dhari, Dhariwal, Dhariwal, Dharoi, Dharu, Dharwal, Dhasania, Dhaswa, Dhat, Dhatarwal, Dhateria, Dhateriya, Dhatiria, Dhatiriya, Dhatiwal, Dhatrawal, Dhauchak, Dhauliya, Dhaulya, Dhaurelia, Dhaureliya, Dhaureliya, Dhaval, Dhavi, Dhawan, Dhawan, Dhaya, Dhayal, Dhayan, Dhe, Dhedu, Dhee, Dhek, Dheru, Dheru, Dhetarwal, Dhevatwar, Dhewa, Dhi, Dhidariya, Dhidhwa, Dhidse, Dhil, Dhilan, Dhilhan, Dhillan, Dhillon, Dhillu, Dhillvan, Dhindas, Dhindel, Dhindhwa, Dhindsa, Dhindwal, Dhingar, Dhingar, Dhingara, Dhingla, Dhingrana, Dhinsa, Dhinwa, Dhinwa, Dhithonia, Dhithae, Dhiwan, Dhnoa, Dho, Dhochak, Dhodi, Dhoka, Dhokia, Dhokiya, Dholan, Dholia, Dholiya, Dhon, Dhonchak, Dhonchak, Dhondha, Dhooki, Dhool, Dhool, Dhoor, Dhorelia, Dhoreliya, Dhori, Dhot, Dhot,) Dhotar, Dhua, Dhuan, Dhudhwal, Dhuki, Dhukiya, Dhul, Dhull, Dhull, Dhullar, Dhuniwar, Dhuria, Dhuriya, Dhuwan, Dia, Didana, Dide, Didel, Didha, Didil, Didwana, Dighalia, Digrana, Dilhan, Dilwal, Dimaniya, Dindel, Dingar, Dingrana, Dingri, Dingwal, Disaniya, Diswar, Diwach, Diwani, Dixit, Diya, Diyar, Doda, Dodania, Dodanya, Dodar, Dodar, Dodarwal, Dodhwal, Dodhwal, Dodwadia, Dodwal, Dodwaria, Dodwariya, Dogawal, Dogh, Dogipal, Dogiwal, Dogiwar, Dogiyal, Dohal, Dohan, Dohan, Dolat, Doli, Dolin, Dondaria, Donderia, Dondoria, Dondwala, Dongar, Dongre, Dooda, Doodee, Doodhwal, Doodi, Dookya, Doonda, Doondi, Doongawala, Doosar, Doot, Dooth, Dor, Dorasar, Dorwal, Dosangh, Dosanjh, Dosd, Dotad, Dotar, Dotasara, Dourwal, Dovan, Dovar, Dovar, Drall, Drehayu, Drehwal, Duddy, Dudee, Dudhwal, Dudi, Dugastawa, Duger, Duger, Dugesar, Dugtawa, Duhad, Duhala, Duhan, Duhan, Duhoon, Duktawa, Dulad, Dulait, Dular, Dular, Dulat, Dulhait, Dullar, Dunda, Dundi, Dundi, Dundwal, Dungawala, Duraha, Durwas, Durwasa, Dusad, Dusadh, Dusar, Elawat, Fadak, Fadak, Fadauda, Fadwal, Fafada, Fagal, Fagania, Fagernya, Fagondcha, Fagonracha, Falaswal, Falaswar, Fanan, Fandan, Fander, Fandhan, Farak, Farasia, Farauda, Fardolia, Fardolia, Fardoliya, Fare, Farroda, Farrola, Farrolya, Farswal, Farwal, Farwal, Faswal, Faug, Faugat, Faujdar, Faundan, Fidauda, Firauda, Fogat, Fogat, Fogawar, Fogawat, Fokha, Fonhar, Foolar, Foolna, Fopha, For, Foren, Forve, Foyar, Fulfakhar, Fulka, Funse, Gaarewal, Gaat, Gaawar, Gabar, Gadad, Gadar, Gadarah, Gadarwal, Gadasia, Gadasia, Gadat, Gadhala, Gadhala, Gadhwal, Gadir, Gadwala, Gagain, Gagat, Gahadwal, Gahaldan, Gahamgal, Gaharawar, Gaharwar, Gahep, Gahlat, Gahlawat, Gahle, Gahlor, Gahlot, Gahlot, Gahrawar, Gaihar, Gaina, Gait, Gajra, Gajraj, Gajral, Gajrania, Gajraniya, Gajva, Gak, Gala, Galari, Galaru, Galati, Gallan, Galsat, Galte, Galuja, Galwa, Gamer, Gand, Gandana, Gandas, Gandawal, Gandha, Gandhar Gair, Gandhar, Gandhar, Gandhari, Gandharva, Gandhas, Gandhasa, Gandhi, Gandhila, Gandia, Gandila, Gandu, Gang, Gangan, Gangas, Ganghas, Gangoni, Gangridi, Gangwali, Ganjas, Ganthawara, Ganwaya, Gaondaya, Garahe, Garali, Garalwal, Garari, Garasa, Garat, Garchi, Gard, Gardan, Gardana, Gared, Garewal, Garhaulia, Garhauwalia, Garhwai, Garhwal, Gari, Garia, Garied, Garir, Garit, Gariya, Garkhal, Garmal, Garona, Garsa, Garu, Garud, Garukhad, Garundia, Garva, Garva, Garvi, Garwa, Garwa, Garwal, Garwar, Gatara, Gathala, Gathani, Gathar, Gatharwal, Gathauna, Gathchal, Gathia, Gathiya, Gathna, Gathona, Gathone, Gathoye, Gathwal, Gathwal, Gathwala, Gathwale, Gathware, Gatia, Gatiya, Gatiyal, Gatiyal, Gaudal, Gauhal, Gaulia, Gaulia, Gauliya, Gauliya, Gaur, Gaurayan, Gauria, Gaurlia, Gauru, Gautam, Gavar, Gawadia, Gawala, Gawar, Gawar, Gawar, Gawaria, Gawaria, Gazwa, Gedas, Geela, Gehlaut, Gehlawat, Gehlot, Gehmaut, Gela, Gelu, Gena, Gendhla, Gendhwal, Gercha, Gerwal, Get, Geta, Ghag, Ghal, Ghalan, Ghalir, Ghallu, Ghalor, Ghalyan, Ghamal, Ghana, Ghangas, Ghanghas, Ghangus, Ghanihar, Gharar, Gharhwal, Gharir, Ghariyala, Gharooka, Gharuka, Gharwal, Ghasal, Ghaswa, Ghaswan, Ghat, Ghatak, Ghatala, Ghatiala, Ghatiyala, Ghatwal, Ghaughela, Ghawa, Ghawal, Ghayal, Ghenar, Ghenial, Gheniyal, Gherwan, Ghet, Ghewa, Ghintal, Ghoghas, Gholya, Ghor, Ghori, Ghosa, Ghosabba, Ghosalia, Ghosaliya, Ghosslya, Ghotal, Ghotia, Ghotiya, Ghuman, Ghumatha, Ghungesh, Ghurpade, Ghurraka, Ghurwal, Gigari, Gila, Gill, Gillu, Gilt, Girja, Girsa, Girsa, Girsey, Gitala, Githala, Githala, Gochhwal, Godai, Godamyan, Godara, Godha, Godhe, Godhi, Gohal, Gohar, Gohel, Gohi, Gohil, Gohit,

Golada, Golia, Goliya, Golya, Golyan, Gond, Gondal, Goni, Goojar, Gopal, Gopalak, Gopat, Goperao, Gopirai, Gora, Gorasia, Gorasia, Gorasia, Gorasiya, Goraya, Gorchhiya, Goreh, Gori, Goria, Goriya, Gorjay, Gorya, Gosal, Got, Gotala, Goths, Gotiya, Gowara, Goya, Goyal, Goyand, Goyat, Grahwal, Grahwar, Grewal, Gre-wal, Gubhar, Guda, Gudara, Gudaria, Gudariya, Gugal, Gugar, Gugarwal, Guhilawat, Gujar, Gul, Gulaiya, Gularia, Gulariya, Guleria, Guleriya, Guli, Gulia, Gulial, Guliyal, Gull, Gumar, Gunela, Gunia, Gupte, Gur, Guraiya, Guraj, Guram, Gurdia, Gurelia, Gureliya, Gurhar, Guriwal, Gurjar, Gurlawat, Gurrah, Gursa, Guru, Gussar, Guwar, Guwarwa, Gwala, Hachach, Had, Hada, Hada, Hadach, Hadtitarwal, Hainga, Hajrah, Hajrah, Hal, Hala, Halawat, Hali, Hamdani, Hand, Handauria, Hanga, Hanga, Hanga, Hangara, Hangila, Hans, Hansawat, Hanselia, Har, Hara, Harach, Harad, Haraich, Harak, Haral, Haran, Haranwal, Harathwal, Haratwal, Haray, Harchatwal, Hardu, Hari, Hari, Haria, Harikar, Haritwal, Hariwal, Hariwar, Hariya, Hartitarwal, Haratiwal, Haselia, Haseliya, Hathingarwar, Hatingarwar, Hatta, Hatyar, Haumal, Hava, Havas, Hawa, Hayal, Heer, Hega, Hela, Heng, Henga, Hinda, Hindaul, Hindol, Hindol, Hindole, Hinia, Hinjar, Hinjara, Hins, Hir, Hirawat, Hirokia, Hirokiya Hiyak, Honjan, Hooda, Hooda, Hooda, Hoodi, Hora, Hudah, Hudda, Hulka, Hundal, Hunga, Huran, Igia, Imeguh, Imran, Inania, Inaniya, Indauliya, Indauriya, Indolia, Indoliya, Iniani, Iniyani, Iniyani, Innaulia, Intar, Isharwal, Isram, Isran, Jabhe, Jabhik, Jad, Jadar, Jadaulia, Jadecha, Jadeya, Jadhav, Jadi, Jadin, Jadiya, Jadu, Jadu, Jaduran, Jaduvanshi, Jadwa, Jafran, Jag, Jaga, Jagal, Jagan, Jagari, Jagaua, Jagdev, Jage, Jaggal, Jaghale, Jagjaun, Jagla, Jaglain, Jaglan, Jaglaranya, Jaglen, Jagoo, Jagra, Jagri, Jagwa, Jahajhara, Jahi, Jaihotra, Jaijan, Jaili, Jaiswar, Jaitwar, Jaiwalia, Jaj, Jajada, Jajaria, Jajariya, Jajda, Jajinda, Jajr, Jajra, Jajua, Jajunda, Jakari, Jakha, Jakhad, Jakhar, Jakhar, Jakhaudiya, Jalauta, Jali, Jalida, Jaliha, Jaliyawda, Jalo, Jalwania, Jalwaniya, Jama, Jamal, Jaman, Jamola, Jamoliya, Jamun, Janak, Janal, Janar, Janawa, Jandal, Jandhu, Jandu, Jandu, Jandu, Janer, Jangada, Jangal, Jangala, Jangar, Jangara, Jangha, Janghala, Janghara, Jangi, Jangoo, Jani, Jani, Janjad, Janjada, Janjar, Janjar, Janjar, Janjara, Janjhada, Janjhaliya, Janmeda, Janmeja, Janmejay, Janoo, Janti, Janu, Janvar, Janwar, Jara, Jarale, Jaralia, Jaraliya, Jaran, Jararnah, Jarawata, Jaria, Jarian, Jariya, Jariyan, Jaroia, Jarpad, Jarpar, Jarwah, Jasar, Jaspal, Jaswal, Jat, Jatain, Jatalli, Jatana, Jatara, Jatarni, Jatasara, Jatasra, Jatatir, Jatda, Jathar, Jathara, Jathu, Jatmali, Jatoo, Jator, Jatra, Jatram, Jatran, Jatrana, Jatrana, Jatrani, Jatri, Jatri, Jattami, Jattan, Jatti, Jatu, Jatu, Jatu, Jauhal, Jauna, Jaunchar, Javali, Javar, Javaria, Javariya, Jawah, Jawali, Jawar, Jawla, Jawala, Jayaswal, Jayjan, Jaymeja, Jeela, Jenjuan, Jeth, Jethoo, Jetri, Jevalya, Jewlia, Jewlya, Jhaal, Jhagdia, Jhagtdia, Jhajhad, Jhajhar, Jhajharia, Jhajhla, Jhajhra, Jhajra, Jhala, Jhall, Jhalli, Jhana, Jhandar, Jhandu, Jhangi, Jhangri, Jhanjar, Jhanjara, Jhanjara, Jhanjaria, Jhanjh, Jhanjhar, Jhanjharia, Jhankar, Jhansra, Jhar, Jharwal, Jhati, Jhatiali, Jhatiyali, Jhawali, Jhijhwaria, Jhillak, Jhinjha, Jhinjhar, Jhinjhwaria, Jhinkwan, Jhojhar, Jhokar, Jholi, Jhorad, Jhorar, Jhujhla, Jhunkale, Jhuran, Jhuria, Jhuriya, Jhuthra, Jiani, Jijja, Jijwaria, Jindar, Jinjwaria, Jitarwal, Jitrana, Jiwla, Jiyol, Jodali, Jodia, Jogda, Jogra, Johal, Johar, Johe, Johil, Johiya, Jolaphiya, Jondi, Jondu, Joojwari, Joon, Joon, Joora, Joorail, Jorhad, Joria, Jota, Jotar, Joveliya, Juadia, Juaria, Judail, Judawa, Judge Juhar Jujwari, Juna, Junaj, Junara, Junava, Junava, Junawa, Junghale, Junjada, Junman, Jura, Jurail, Jurel, Jyani, Ka, Kaail, Kabiri, Kachauria, Kachauria, Kachchhawa, Kachela, Kachela, Kacheria (, Kacheriya, Kachha, Kachhwaha, Kachhwaha, Kachhwala, Kachir, Kachmunia, Kadal, Kadan, Kadaria, Kadariy, Kadeeyan, Kadhiyan, Kadian, Kadiyan, Kadu, Kadwa, Kadwal, Kadwasra, Kadyan, Kaen, Kagar, Kaghar, Kaharwar, Kahlon, Kahlon, Kahral, Kaik, Kairapa, Kairial, Kairu, Kaith, Kaithoria, Kajal, Kajala, Kajaria, Kajla, Kajli, Kak, Kak, Kakad, Kakar, Kakas, Kakda, Kakdawa, Kakhandi, Kakk, Kakkad, Kakkar, Kakkur, Kakodia, Kakra, Kakralia, Kakran, Kakraul, Kakrawa, Kaktiya, Kakustha, Kala, Kalaan, Kalaliya, Kalani, Kalash, Kalasman, Kalaw, Kalawat, Kale Rawat, Kale, Kaler, Kaler, Kaleramne, Kalev, Kalhan, Kalhar, Kalhar, Kalheer, Kalher, Kalidhaman, Kalil, Kalir, Kaliraman, Kalirambha, Kaliramna, Kaliramta, Kalirana, Kalirawna, Kalirawte, Kaliraye, Kalishak, Kaliy, Kaliya, Kaliyani, Kaliyar, Kalkal, Kalkhand, Kalkhund, Kalkil, Kalmash, Kalon, Kalora, Kalota, Kalsar, Kalsi, Kalwana, Kalwaniya, Kalwariya, Kalya, Kalya, Kalyan, Kamal, Kamana, Kamar, Kamboh, Kamboj, Kamedia, Kamediya, Kameria, Kanchap, Kanchu, Kandar, Kandhol, Kandhola, Kandhwala, Kandi, Kandji, Kandoli, Kandori, Kandwal, Kandwal, Kanera, Kang, Kangare, Kangoria, Kangoriya, Kangri, Kanhaiya, Kanjalan, Kanjan, Kanjun, Kankarwal, Kankhadi, Kankhandi, Kankoria, Kansujia, Kansujiya, Kantia, Kantiya, Kanv, Kanwal, Kanwala, Kanwalada, Kanwaniya, Kapahi, Kapai, Kapdia, Kaped, Kapooria, Kapria, Kapureya, Kapuria, Karach, Karachh, Karadiya, Karalia, Karana, Karaskar, Karesia, Kari, Karia, Karib, Karig, Karil, Karir, Kariwal, Kariwar, Karkala, Karkar, Karkara, Karkotak, Karman, Karmi, Karmir, Karmit, Karmora, Karnias, Karonta, Karpashv, Karursaru, Karvir, Karwa, Karwada, Karwal, Karwandi, Karwaniya, Karwanya, Karwar, Karwar, Karwara, Karwasra, Karwir, Kasan, Kasania, Kasanwal, Kasanwar, Kashiwat, Kashnay, Kashyap, Kasiniwal, Kasmila, Kastura, Kasuan, Kasvan, Kaswan, Kasya, Kataila, Katamia, Katania, Kataniya, Katar, Katara, Kataria, Katariya, Kate, Katewa, Kath, Katharia, Kathariya, Katheria, Katheriya, Kathia, Kathoriya, Kathwal, Kathya, Katira, Katkhar, Katwar, Katwariya, Katyal, Kaul, Kaunteya, Kaurava, Kavari, Kawala, Kawan, Kawlada, Kedia, Kedwal, Keet, Kekay, Keken, Kekeraul, Kekeraul, Kelar, Keli, Kewda, Khabivia, Khabiviya, Khachari, Khada, Khadai, Khadanla, Khadar, Khadaul, Khadaw, Khadda, Khaderia, Khaderia, Khaderiya, Khadwal, Khag, Khagar, Khagwal, Khahare, Khaidar, Khainwar, Khairawi, Khairia, Khairu, Khairva, Khairwa, Khaiwal, Khajuria, Khajuriya, Khak, Khakal, Khakhar, Khaladiya, Khalia, Khaliar, Khaliya, Khaliyar,

Khaliye, Khalkar, Khalwadania, Khan, Khana, Khanda, Khandaulia, Khandel, Khandia, Khangal, Khangas, Khangat, Khangori, khangora, Khanothia, Khanwara, Khara, Kharad, Kharad, Kharadwal, Kharal, Kharal, Kharash, Kharat, Kharav, Kharb, Kharbad, Kharbas, Khare, Khareria, Khargi, Kharinta, Kharita, Kharkar, Kharo, Kharod, Kharoki, Kharra, Kharub, Kharvel, Kharwal, Kharwal, Kharwas, Khasa, Khasaria, Khasariya, Khatak, Khatiyan, Khatkad, Khatkal, Khatkar, Khatras, Khatre, Khatri, Khatria, Khattarwal, Khatte, Khatuwala, Khatwal, Khavaria, Khavonia, Khavoniyan, Khawadwal, Kheda, Khedad, Khedar, Khekarel, khenwar or khenvar, Kheleri, Kher, Khera, Kherav, Kherwa, Khes, Khet, Khetri, Khichad, Khichar, Khichi, Khidar, Khileri, Khinad, Khinar, Khinwal, Khirwal, Khirwali, Khirwar, Khod, Khodia, Khodiwal, Khodiya, Khoi, Khoja, Khokar, Khokha, Khokhal, Khokhal, Khokhan, Khokhar, Khokhia, Khokhina, Khokhya, Khokkar, Khola, Khona, Khondal, Khondal, Khone, Khongh, Khor, Khoria, Khoriya, Khorwar, Khosa, Khosar, Khosh, Khoswal, Khot, Khoth, Khoti, Khowde, Khoye Maurya, Khudkhudia, Khukar, Khukardaya, Khunga, Khunkhunia, Khunkhuniya, Khuntail, Khuntal, Khuntel, Khuntela, Khurasan, Khurasya, Khutail, Khutala, Khutel, Khutela, Khuvar, Khuve, Khyalia, Kichar, Kidar, Kidariy, Kikat, Kikhandi, Kilak, Kiledar, Kilhore, Kiliraya, Kilkani, Kimu, Kina, Kine, Kinha, Kinha, Kinoni, Kiram, Kirdolia, Kirdoliya, Kishtwar, Kivar, Kiyara, Kjaat, Koak, Kodia, Kohad, Kohat, Kohawar, Kohir,) Kohid, Koid,) Koil, Koir, Kojhal, Kok, Kokarati, Kokorani, Kol, Kolanwat, Kolar, Koleron, Kolpi, Konar, Kondal, Konjal, Konkan, Kont, Konth, Kookana, Kooner, Koont, Kor, Korat, Kori, Kornal, Korwal, Kot, Kotar, Koth, Kothar, Kothari, Kotwal, Kountel, Kountel, Koyad, Koyam, Koyam, Koyara, Krishnia, Krishniya, Kritna, Kudan, Kudar, Kuderiah, Kudi, Kudia, Kudna, Kuhad, Kuhadia, Kuhadia, Kuhar, Kuhar, Kuharia, Kuhia, Kuiya, Kujal, Kukada, Kukadya, Kukana, Kukania, Kukar, Kukara, Kukla, Kuladia, Kulak, Kulakia, Kular, Kularia, Kulawat, Kuldapa, Kulhad, Kulhar, Kulhari, Kullama, Kullar, Kullya, Kulwaria, Kumud, Kund, Kunda, Kundal, Kundal, Kundal, Kundana, Kundarwal, Kunder, Kunderwal, Kundodar, Kundu, Kunjar, Kunswa, Kuntal, Kunthal, Kunthal, Kuntibhoj, Kuradia, Kuradiya, Kuran, Kuranlya, Kurdia, Kureli, Kurelia, Kureriah, Kuri, Kurmi, Kuru, Kuruvanshi, Kurwasra, Kurwasra, Kush, Kushan, Kushana, Kushman, Kushmandak, Kushwah, Kuswan, Kuswan, Kuthar, Kyolaria, Kyolariya, Laangar, Laathar, Laboria, Lachau, Laddha, Ladhauria, Ladhauriya, Laduh, Ladur, Ladwal, Lagwan, Lahan, Lahar, Lahari, Lahaur, Lahaur, Lahaura, Lahauria, Lahauriya, Lahel, Lahiri, Lainga, Lakada, Lakdam, Lakde, Lakharan, Lakhepuria, Lakhepuriya, Lakhi, Lakhilan, Lakhlan, Lakkad, Lakra, Lakre, Lal, Lalar, Lalaria, Lalariya, Lalau, Lalere, Lalgathwaria, Lalli, Lalwane, Lamba, Lamba, Lamboria, Lamboriya, Lamina, Lamoria, Lamoriya, Lamrod, Lamror, Lamva, Lan, Lana, Langar, Langoria, Lanva, Lathar, Lathar, Lathee, Lathi, Lathir, Lathiyan, Lathiyar, Lathmar, Lathor, Lathwal, Latial, Latiyal, Latiyan, Latwal, Lauchak, Laur, Laur, Lautia Lautiya, Lava, Lavach, Lavariya, Lavayach, Lega, Legha, Lehal, Lehga, Lekhon, Leppa, Lepswal, Lidaj, Lidrad, Lila, Lilwa'"Litt, Livaria, Loa, Loach, Loat, Lochag, Lochag, Locham, Lochan, Lochar, Lochhav, Lochib, Lochiva, Lodha, Lodhan, Logha, Lohach, Lohach, Lohamsher, Lohan, Lohana, Lohar, Lohariya, Lohayan, Lohchab, Lohchav, Lohian, Lohit, Lohmarod, Lohmaror, Lohmor, Lohra, Loka, Lokhad, Lol, Lomrod, Lomror, Lomror, Lomror, Lon, Lonayat, Lonkas, Lonkha, Lopa, Lora, Lora, Lotasra, Lotian, Loura, Lovak kshatriya, Loyal, Luhach, Luhana, Luka, Lukha, Lulada, Lulane, Lulara, Lunaich, Lunait, Lunayach, Lunayat, Maan, Machh, Machhar, Machhra, Machra, Machwa, Mad, Madaina, Madan, Madania, Mader, Maderna, Madh, Madhan, Madhan, Madhur, Madhuria, Madhyan, Madra, Madra, Madrak, Madrak, Madraka, Madrayana, Magawa, Mahal, Mahalwal, Mahalwar, Mahar, Maharia, Mahariya, Mahawal, Mahe, Mahel, Maheria, Mahia, Mahil, Mahit, Mahiya, Mahla, Mahlan, Mahlania, Mahlawat, Mahlawat, Mahndiyan, Mahowar, Mahra, Mahria, Mahua, Mahur, Mahure, Maichi, Mailau, Maina, Mainarya, Maini, Mairiha, Maiya, Majh, Maju, Makad, Makar, Malan, Malawadsara, Malay, Malen, Malhan, Mali, Malia, Malik, Maliy, Maliya, Mall, Malla, Malli, Malloi, Malviya, Mamar, Mana, Mand, Manda, Mandal, Mande, Mander, Mander, Mandi, Mandia, Mandiwal, Mandiya, Mandla, Mandloi, Mandolia, Mandolia, Mandowaria, Mandrya, Mandwa, Manga, Mangadh, Mangat, Mangawa, Mangdauda, Mangdaura, Mangeli, Mangeria, Manghat, Mangla, Mangwana, Manjari, Manjh, Manju, Mankad, Mankar, Manmawa, Manmoda, Mann, Manth, Manwal, Manwalia, Marawat, Mare, Maru, Marwada, Masand, Masra, Mathan, Mathar, Matharu, Mathur, Mathuria, Mathuriya, Matian, Matiyan, Matkane, Matoria, Matra, Matri, Matsara, Matsya, Mattu, Matuk, Matwa, Matwa, Matwe, Mauhal, Maukhari, Maurya, Mavala, Mawla, Mawlia, Mawlya, Maya, Mayla, Mechu, Meel, Meethe, Mehandiyan, Mehariya, Meheria, Mehiwal, Mehla, mehlot, Mehra, Mehria, Mehta, Mehto, Melyan, Menchu, Meway, Michchhat, Michharwal, Milki, Minerva, Mirdha, Mitharwal, mitha, Mitharwar, Mithe, Miyala, Moga, Mohan, Mohar, Mohil, Mohiya, Mohjit, Mohla, Mohra, Mokhari, Mola, Mondiyada, Moond, Moonth, Mor, Mori, Morsara, Morwal, Mothara, Mothda, Mothra, Mothsara, Mothshera, Motra, Motsara, Mudalia, Mudlan, Mudwada, Mudwara, Mudwaria, Muhal, Muhra, Mukati, Mukul, Mund, Mund, Mund, Munda, Mundalia, Mundaliya, Mundaliya, Mundan, Mundaria, Mundel, Mundhan, Mundhlan, Mundiyada, Mundiyan, Mundiyara, Mundlan, Mundlia, Mundwadia, Mundwaria, Mungawa, Munhtor, Muralia, Muravatia, Murawatia, Muwal, Myan, Nadal, Nadal, Nadar, Nadarya, Nadauri, Nadhan, Nadhe, Nadilaya, Nadral, Nag, Naga, Nagar, Nagari, Nagauria, Nagil, Nah, Nahal, Nahala, Nahar, Nahara, Nahare, Nahariwal, Naharwal, Naharwar, Nahdhe, Nahir, Nahnia, Nahniya, Nahra, Naich, Naidu, Naij, Nain, Nainjaj, Naira, Nairiha, Naiyal, Najari, Najili, Najor, Nakhal, Nakwal, Nalwa, Nanaulia, Nanaulia, Nanauliya, Nandal,

शेष अगले भाग में........

प्रेम और सत्य की संघर्ष-कथा

– डॉ0 धर्मचन्द्र विद्यालंकार

यह लेखक अपने अब तक के अनवरत अध्ययन और अनुशीलक से यही कह सकता है कि 'वार एण्ड़ पीस' लेव टालस्टाय की युद्ध ओर प्रेम पर अब तक एक सम्पूर्ण गद्य रचना(उपन्यास) मानी जाती रही है। क्योंकि उसमें युद्ध की विभीषिका का बेवाक विश्लेषण है तो दूसरी ओर अपूर्ण प्रेम की दुखान्तिकी भी है। लगभग इन्हीं समस्याओं से जूझती एक रचना अभी-अभी हमारी नजरों से गुजरी है जोकि अमेरिकी गद्यकार हावर्ड फास्ट की औपन्यासिक कृति है। जिसमें एक अमेरिकी युवा पत्रकार द्वितीय विश्व-युद्ध का आँखों देखा वर्णन बयान करता है। वह युद्ध का मूल कारण आर्थिक लूट को ही मानता है। तो उसका परिणाम मानवता के महान-मूल्यों - दया एवं करूणा तथा प्रेम और सद्भाव की क्षति को ही देखता है। पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियाँ बेशक ऊपर से उदारता एवं शान्ति और जनतंत्र का नारा दे रही थी लेकिन उनका मूलोद्देश्य भी युद्ध के माध्यम से धन-लूटना ही था। भले ही जर्मन जातीय अथवा नस्ल की नाव पर भी सवार था। तो अमेरिका परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र था। हिंदी में अनुदित फास्ट का 'प्लैज' अथवा 'शपथ' कुमार मुकेश द्वारा अनुदित यह उपन्यास एक काल्पनिक गद्य-रचना ही है, तथापि वह यथार्थवादी इतिहास-बोध से भरपूर है जैसाकि उपर्युक्त पुस्तक के प्रस्तावना लेखक लाल बहादुर वर्मा ने भी यहाँ पर रेखांकित किया है- ''हावर्ड फास्ट ने मुझे क्रांतिकारी साहित्य ही नहीं, इतिहास की भी समझ दी है- इतिहास- बोध को समृद्ध करने के लिये हावर्ड फास्ट जैसा प्रतिबद्ध परन्तु यथासंभव वस्तुनिष्ठता का निर्वाह करने वाला ऐतिहासिक गल्प किसी भी इतिहास-पुस्तक से अधिक और उपयोगी है।''

इस उपन्यास का नायक ब्रूस नामक युवा पत्रकार द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारत में 'डेली वर्कर' जैसे अमेरिकी समाचार-पत्र और 'ट्रिब्यून' का भी संवाददाता बनकर आता है। वह बेशक ब्रिट्रिश लोगों के साथ रहता है और उठता-बैठता है लेकिन युद्ध और अकाल को देखने का दृष्टिकोण उसका उनसे सर्वथा ही भिन्न है। वह बंगाल के अकाल 1941-42 के लिए बिट्रिश साम्राज्यवाद को भी उसी भाँति साठ लाख बंगालियों की भूख से मृत्यु के लिए उत्तरदायी मानता है जैसेकि जर्मनी में हिटलर को उतने ही यहूदियों के निर्मम नरसंहार के लिए मानता है। इस मत-निर्माण में उसे बंगाली श्रमजीवी पत्रकार प्रो० अशोक चक्रवर्ती जैसे बुद्धिजीवियों से भी सहायता मिलती है। जिनको अंग्रेज-सरकार ने मरवा दिया था। उसी प्रकार से उनसे सम्पर्क स्थापित करने के कारण अमेरिकी पत्रकार को भी ब्रिट्रिश गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी देश-निर्वासन देना चाहता है; अथवा उसको उस समाचार-पत्र की नौकरी से ही निकलवा देना चाहता है। या फिर उसे कठोरता के साथ शारीरिक दण्ड़ ही दिलवाना चाहता है। लेकिन वहीं पर एक कम्युनिष्ट विचार-व्यवस्था से प्रभावित हिल हरमन नामक ड्राईवर उसको भारत से भागने में सहायता करता है। ब्रूस, युद्ध की समस्या और भारत के आकस्मिक अकाल जैसे विषय पर एक प्रामाणिक और दस्तावेजी पुस्तक लिखने के लिए अमेरिका के 'डेली-वर्कर' समाचार-पत्र से एक वर्ष का अवकाश भी ग्रहण कर लेता है। उसी के कार्यालय में उसकी भेंट एक परित्यक्ता आयरिश युवती पत्रकार मौली से होती है, जोकि उसी समाचार-पत्र की स्थानीय संवाददाता है और वामपंथी विचारधारा से ओत-प्रोत है। लेकिन अमेरिका में तब वामपंथियों को कहीं नाजियों से भी अधिक भयावह माना जाने लगा था। क्योंकि वे पूँजीवादी साम्राज्यवाद का प्रबल प्रतिरोध और समता का सबल समर्थन भी तो करते ही थे। जबकि अमेरिका और इंग्लैंड जैसे पूँजीवादी राष्ट्र, स्वतंत्रता (व्यक्तिगत) को ही सर्वोत्तम मानते थे। व्यक्तिगत रूप से अकूत-सम्पत्ति संचय के भी ये राष्ट्र प्रबल पक्षध र थे ही।

बंगाल के अकाल में जबकि चावल व्यापारियों के गोदामों में सड़ रहे थे क्योंकि उनको उतने मंहगे मूल्य का कोई खरीददार ही वहाँ नहीं था। दूसरी ओर भूखे-नंगे निर्धन और निरीह लोग सड़कों पर अकाल काल के गाल में समा रहे थे। जब ब्रूस और अशोक चक्रवर्ती जैसे स्थानीय श्रमजीवी पत्रकार और प्रो0 मजूमदार जैसे प्रगतिशील बुद्धिजीवियों ने यह आवाज उठाई थी। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से तो अंग्रेज सरकार ने बजाय खाद्यान्न व्यापारियों के बफर-स्टॉक पर छापे मारकर उस खाद्य-सामग्री को जब्त करने के लिए उन धनपशुओं को मोटा मुनाफा कमाने का स्वत: ही उन्मुक्त अवसर भी प्रदान किया था। फिर आलोच्य कृति के रचनाकार ने अपने नायक ब्रूस के माध्यम से एक रणनीतिक कोण और भी इस समस्या की पृष्ठभूमि में यह पाया है कि पूर्व से जापानी सेना के आक्रमण को विफल और कमजोर करने के लिए भी भारतीय जनता की कमर तोडना बिट्रिश साम्राज्यवादी राजनीति के लिए अपरिहार्य था; ताकि भूखी-नंगी भारतीय जनता विश्वशुद्ध में जापान और आजाद हिन्द सेना के साथ कटिबद्ध होकर संग्राम सन्नद्ध न हो सके।

बस उसके इन्हीं क्रांतिकारी विचारों और निष्कर्षों से ही तो बिट्रिश-साम्राज्यवाद कुपित हो उठा था। उधर युद्ध में उसे हथियार बेचकर मोटा मुनाफा कमाने वाला अमेरिका भला अपने ही रक्तबंध ु अंग्रेजों की इस कपटनीति का क्यों विरोध और उद्घाटन करते। अतएव अधिकाँश अमेरिकी पत्रकार जोकि स्वयं को स्वतंत्रता और उदारता एवं जनतंत्र जैसे मानव-मूल्यों के सजग प्रहरी समझते थे, उनके भी मुँह इस बात पर सिले हुए थे। ब्रूस के अमेरिका पहुँचने पर मौली के प्रति ब्रूस का प्रेमानुराग अनुदिन अटूट होता चला जाता

है। वही उसे अमेरिका में चल रही साम्यवाद विरोधी आतंकी से परिचित कराती है। अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध का सारा श्रेय परमाणु बम डालकर जापान का समर्पण कराकर स्वयं ही हथिया लिया था। बावजूद इसके कि अपने दो करोड़ सैनिकों और नागरिकों की बलिदानी कुर्बानी देकर जर्मन के नाजीवादी जबड़े से विश्व-मानवता को मंगल मुक्ति रूस ने ही दिलवाई थी। लेकिन स्टॉलिन की जो बलाद् सम्पत्ति-अधिग्रहण A bolations of Private Property नामक जो क्रांतिकारी परन्तु हिंसायुक्त कार्यक्रम था, उसके आधार पर ही पूरा पश्चिम अथवा यूरोप उसका विरोधाी बन बैठा था। इसीलिए अमेरिका में भी युद्धोत्तर काल में साम्यवाद और सोवियत संघ विरोधी विषैली वायु बह रही थी।

इस विषय में भूमिका लेखक श्री लाल बहादुर वर्मा का मन्तव्य मननीय है-''फास्ट के अधिकाँश गल्प की पृष्ठभूमि पश्चमी जगत् है, जिसके भूगोल-इतिहास पर उनकी अच्छी पकड़ है। देशकाल समकालीन हो या प्राचीन, विश्वनीयता इसीलिए उनके लेखन की आधारशिला है। 'शपथ' के एक हिस्से की पृष्ठभूमि बिट्रिश राज के अन्तिम दिनों का कलकत्ता है, जो न केवल न्यूयार्क के विपरीत ध्रुव पर था; उपनिवेशवाद की राजधानी स्वयं लंदन से भिन्न था, पर 'शपथ' का कलकत्ता उसके पात्र पत्रकार अशोक चटर्जी और (प्रो0) मजूमदार वगैरहा भी पूरी तरह विश्वसनीय है। सबसे दिलचस्प है युद्धकाल में भारत में बिट्रिश एवं अमेरिकी फौजियों का (नैतिक) आचरण। भारत में जनता पर आरोपित अकाल का वह पक्ष इस उपन्यास में उजागर है, जिसे प्राय: समकालीन रचनाओं में नहीं पाया जाता। दूसरी ओर कहानी का अमेरिकी पात्र जब अपने देश पहुँचता है, तो वहाँ पर भी उसकी भारतीय जनता के प्रति प्रतिबद्धता वहाँ की व्यवस्था को रास नहीं आती है और वह अमेरिकी राजनीति की कम्युनिष्ट-ग्रस्तता(ग्रंथि) से आक्रांत होकर भारी कीमत चुकाता है।''

अमेरिका में राष्ट्रपति टूमैन(हनोवर) के मन्त्रीमण्डल में शामिल गृहमंत्री मैकार्थी एक अलोकतांत्रिक और तानाशाह व्यक्ति है। वह साम्यवाद के समानता और स्वतंत्रता एवं उदारता जैसे जनतांत्रिक मूल्यों का घोर विरोधी है। वह गुप्तचर विभाग के साथ मिलकर एक 'अनअमरेरिकन-हाऊस' नामक गुप्तचर परन्तु उपर से दिखावे को नागरिक संस्था का गठन करता है। जिसके द्वारा उदारतावादी और मानवतावादी एवं समतामूलक मानव-मूल्यों में विश्वास करने वाले अमेरिकी तथा विदेशी नागरिकों को वैचारिक रूप से आतंकित करती है। उनके स्वतंत्र विचारों को प्रेस में प्रतिबन्धित करती है। ब्रूस, जो पुस्तक द्वितीय विश्वयुद्ध और भारत के अकाल पर लिख रहा था। उसको अमेरिकी गुप्तचर विभाग ने प्रकाशित नहीं होने दिया था और उसके पीछे पुलिस लगा दी गई थी। उसके द्वारा डेली-वर्कर जैसे साम्यवादी रूझान वाले समाचार-पत्र की स्थानीय पत्रकार मौली के प्रेम-प्रसंग को भी पुलिस और प्रशासन कहाँ पसन्द करता है, फिर भी उनका प्रेम अनन्य और अटूट है।

आखिर में अमेरिकी गुप्तचर विभाग एक सम्मन भेजकर ब्रूस को 'अनअमेरिकन हाउस' की एक न्यायपीठ के सम्मुख बुलवाता है। जहाँ पर वह उसे उसके साम्यवादी होने के विषय में पूछताछ करती है। जब वह ज्यूरी मौली के कम्युनिष्ट होने की हामी उससे भरवाना चाहती है तो वह प्रेमातिरेक के कारण ब्रूस उसके विषय में कुछ भी बोलने और बताने से स्पष्ट रूप से इंकार कर देता है। बस यहीं से उसकी दुखान्तकी और त्रासद-कथा आरंभ होती है। अत: न्यायालय की अवमानना के अपराध में उसे एक वर्ष की सजा हो जाती है। अब तक ब्रूस और मौली मित्रभाव से ही सहजीवन जी रहे थे और परस्पर में प्रेम का उन्मुक्त भाव से आदान-प्रदान भी कर रहे थे। लेकिन जेल में जाने से पूर्व ही मौली और वह दोनों विवाह के बन्धन में बँध जाते हैं। हालांकि ब्रूस की माँ मिसेज़ बेकण मौली को पसन्द नहीं करती है, क्योंकि वह कम्युनिष्ट और निम्नवर्गीय आयरिश परिवार से भी सम्बन्ध रखती है। लेकिन ब्रूस, मौली के गृहनगर के एक गिरजिाघर में जाकर उसके साथ विवाह रचा लेता है। फिर भी उसके उदारवादी विचारों वाले पिता डॉ० बेकन उसको अपना आर्शीवाद और सहयोग समर्थन भी देते रहते हैं। जेल जाने से पूर्व मौली को ब्रूस से मिलने के लिए उसकी पत्नी बनना जरूरी था।

अमेरिका की जेलों में जाकर ब्रूस यह अनुभव करता है कि तीस के दशक की मंदी की मार से उबरकर अमेरिका 40 ई० के दशक में बेशक एक सम्पन्न और विकसित देश कहलाने लगा था, लेकिन तदपि वहाँ पर निर्धनता और असमानता व्यापक रूप से व्याप्त है। इसीलिए जेलों में चोरों और जुआरियों से लेकर डकैतों तक की भरमार थी। जिनके बीच में केवल विचार-विरोधाी होने के ही कारण उसको भी एक मास तक रहना पड़ा था। ओर कमरतोड़ शारीरिक श्रम भी करना पडा था। आखिर में एक महीने के बाद 'मिलवोग' नामक एक उन्मुक्त वातावरण वाली जेल में उस बंद कर दिया जाता है। जहाँ पर सभी आधुनिक सुविधाएँ 'समाचार-पत्र' और पत्रिकाएँ तक उपलब्ध हैं। लेकिन सरकार विरोधी पत्र-पत्रिकाओं के प्रवेश पर वहाँ भी प्रतिबन्ध है। यहाँ पर ब्रूस को वर्कशाप में काम दिया गया है। उसका प्रभारी एक क्रूर और राक्षस प्रवृत्ति का व्यक्ति है जोकि बिना किसी कारण के भी अपने सहकर्मियों के साथ गाली-गलौंज और मारपीट भी करता है। एक दिन ब्रूस के साथ वही करने पर ब्रूस उसे पीट-पीट कर अधमरा कर देता है। अतएव उसने पहली बार जीवन में हिंसा का सहारा लिया था।

उधर उसकी पत्नी और प्रेमिका मौली उसके साथ निरन्तर अपना सम्पर्क पत्राचार द्वारा बनाये रखती है। ब्रूस भी अपने नये बंदी-जीवन के अचीन्हें रहस्यों से उसको पत्रोत्तर द्वारा अवगत कराता रहता है। उधर वह अपने माता-पिता के सतत सम्पर्क में भी बना रहता है जोकि उसको लेकर अत्यन्त चिन्तित और उदास रहते हैं। उध र मौली की भी सर्विस केवल कम्युनिष्ट होने ओर उसके सम्पर्क के कारण ही छुडा दी जाती है। लेकिन ब्रूस के पास जो जमा-पूँजी थी,

उसी से वह निर्वाह करती है; साथ में सेल्स गर्ल के तौर पर पार्टटाईम जॉब भी करती ही रहती है। उधर उसने उसी अन्तराल में ब्रूस बेकन की पुस्तक को भी तो प्रकाशित करा दिया है, जिससे कि अमेरिकी तथा कथित वैचारिक उदारता का दिखावा करने वाली सरकार और भी अधिक भयभीत हो उठती है, क्योंकि इस पुस्तक में किये गये रहस्योद्घाटन के चलते अपने परम-मित्र राष्ट्र इंग्लैंड से भी सम्बन्ध ों में खटास आ सकती है। कारण इस पुस्तक में बिट्रिश साम्राज्य को ही बंगाल के अकाल में मरने वाले साठ लाख निरीह और निर्धन लोगों की मौत के लिए उत्तरदायी ठहराया गया था।

उधर 'मिल-वाग' नामक जेल से ब्रूस की मुक्ति का दिन आ जाता है तो उधर अमेरिकी खुफिया विभाग उसके विरुद्ध एक रूसी एजेन्ट को गवाह बनाकर उसके विरुद्ध अमेरिका के विरुद्ध रूस के लिए गुप्तचरी का मिथ्यारोप लगाकर उसको देशद्रोह का अभियुक्त बनाना चाहता है। मौली को ब्रूस की वकील सिल्विया से यह ज्ञात होता है। इसीलिए वह रात्रि के निविड़ अंधकार में एक वनमार्ग से ब्रूस को जेल से बाहर निकालकर मैक्सिको भागने का कार्यक्रम तैयार करती है और वहीं पह अपने शेष जीवन के सुखमय एवं सुनहरी स्वप्न भी संजोती है। वह पूर्व योजना के अनुसार निकटवर्ती हवाई अड्डे की ओर कार में ब्रूस को ले जा रही होती है, तभी वहाँ की स्थानीय पुलिस उनको रुकने का संकते करती है लेकिन वह रुकती नहीं है। इसलिए पुलिस की गाडियों से टकराकर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार से अपने पावन-प्रेम की बलिवेदी पर वह अपना आत्मोगत्सर्ग करती है। उधर अमेरिकी सरकार ने उदारता का मुखौटा ओढकर ब्रूस पर देशद्रोह का मुकदमा चालने का इरादा भी छोड दिया था क्योंकि ब्रूस बेकन की पुस्तक विश्वव्यापी बैस्ट सेलर जो बन चुकी थी। जिससे अमेरकिी सरकार को अपनी बदनामी का डर था।

अतएव यह पुस्तक एक ही साथ प्रेम, स्वप्न और संघर्ष की भी लोमहर्षक व रोचक कथा है। जब दुर्घटना में मौली की दुखद मृत्यु हो जाती है तो मौली का जीजा पादरी ओहारा उसके विषय में ब्रूस को यही कहता है - ''एक गंभीर भूल'' क्योंकि देखो तुम एक ऐसी औरत के लिए आँसू बहा रहे हो, जो सब कुछ ठेंगे पर रखती थी। सभी के लिए फिक्रमंद और जिसका दिल पूरी दुनिया से बड़ा था। मुझे सारी कहानी मालूम है... तुमने उसे(बहुत) कम आंका है। तुम(यही) समझते रहे कि वह एक जोशीली अव्यावहारिक वामपंथी है और एक सनकी आयरिश दिमाग वाली छोकरी, जिसके अव्यावहारिक कदम हमेशा हवा में ही रहते हैं, पर यह उसे छोटा करने वाली बातें हैं- तुम मौली के विश्वासों पर बहस कर सकते हो; जो कहना हो कह सकते हो, पर याद रखो जो कुछ(भी) तुम कहोगे, वह उसी के स्वप्न का हिस्सा होगा।' (पृ० 348)

अत: हावर्ड फास्ट ने यहाँ आकर इस प्रेम ओर संघर्ष की कथा को दुखान्तिकी में बदल दिया है, यदि अमेरिकी गुप्तचर विभाग के निर्णय-परिवर्तन की सूचना मौली को पहले मिल जाती तो भी यह प्रेम-कथा सुखान्त ही होती। यदि ऐसा हो भी गया था तो भी ब्रूस का सिल्विया के साथ प्रेम-प्रसंग या फिर ग्रंथी-बन्धन दर्शाकर भी इस कष्टकथा को सुखान्त बनाया जा सकता था। फिर भी वर्तमान भारतीय राजनीति में भी यह उपन्यास सन्दर्भ सापेक्ष है, क्योंकि यहाँ पर भी उदारतावाद की वर्तमान में लगभग वही स्थिति है। अनुवादक कुमार मुकेश की भाषा जीवन्त है, अतएव पुस्तक रोचक और विचारोजेत्तक एवं कलात्मक भी है। यह एक ही साथ इतिहास और साहित्य की भी रचनात्मक कृति बन पड़ी है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 31.08. 96) 25/5'3" MA English, B.Ed., CTET from Punjab University. Working as Teacher in private school. Father and mother in Government service. Family settled in Panchkula/Chandigarh. Avoid Gotras:Sheokand, Ahlawat, Nain. Cont.: 9041686481
- SM4 Jat Girl (DOB 12.03. 92) 30/5'7" B. Tech., M. Tech. from Kurukshetra University. Running own educational institute, Vision Institute with income of Rs. 4-5 lakh. Father retired Army personnel and now employed in Delhi Police. Mother housewife. Avoid Kajla, Sangwan, Chhikara. Cont.: 9891351685, 9671537575
- SM4 Jat Girl (DOB 28.08. 91) 30/5'2" M.Sc. Math, M.Sc. Psychology (Gold Medalist). P.G. Diploma in Guidance & Counseling, B.Ed., (CTET, PRT & TGT) (APS-CSB-PRT). Employed as Counselor in KVS. Father retire Kanungo. Mother housewife. Avoid Gotras:Rathee, Jhanjhariya, Rohz, Direct Ahlawat. Cont.: 9992075101
- SM4 Jat Girl (DOB 10.07. 95) 26/5'7" Graduate (BBA). Father's own business in Real Estate. Mother housewife. Avoid Gotras:Sheoran, Nain, Duhan. Cont.: 9414465295
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08. 97) 24/5'7" B. Sc. (Hons.) from Delhi University, M.Sc. (Goology) from Kurukshetra University. Pursuing B.Ed. Father Government Math Teacher. Mother housewife. Brother Captain in Army. Own house at Bhiwani. Avoid Gotras:Goyat, Dangi, Tomar, Chahal. Cont.: 7696002015
- SM4 Jat Girl (DOB 19.12.95) 26/5'3" B.Tech. (Mechanical Engineering). Working as Senior Engineer in MNC Gurugram with Rs. 7 lakh package PA. Avoid Gotras:Dhankhar, Hooda, Nandal. Cont.: 9465529776
- SM4 Jat Girl (DOB 23.07.98) 23/5'4" B.Sc. (Non-Medical) M.A. (English) CTET qualified, Pursuing B.Ed. Father in Government job. Mother housewife. Family living in Chandigarh. Avoid Gotras:Sinhmar, Nehra, Beniwal. Cont.: 9417753780
- SM4 Jat Girl (16.08.90) 31/5'5" M.A., M.Sc., HTET, TGT, PGT, CTET, NET (Geography), B.Ed. Employed as Government PGT Lecturer Geography (2019 Batch). Avoid Gotras: Rathi, Jhanjharia, Dabas. Cont.: 9588106827, 9053305190
- SM4 Jat Girl (05.10.93) 28/5'6" B.Sc. Computer Science from P.U. Chandigarh. B.Ed. Childhood education: Herzing College Montreal, Canada. Currently working in Montreal Canada. Applied for P.R. Father retired Inspector from Chandigarh Police.

Mother housewife. Avoid Gotras: Lohchab, Hooda. Cont.: 8146991568, 9877640592

- SM4 Jat Girl (19.06.96) 25/5'4" BA (Hons.) English from Delhi University. M.A. (English) from Jamia Millia Islamia Delhi. NET, JRF qualified. Pursuing PhD. In English. Working as Assistant Professor English at K. R. Mangalam University Sohna. Father Superintending Engineer in Panchayati Raj Haryana. Mother Associate Professor in Government College. Brother Manager HDFC. Family settled at Gurugram. Avoid Gotras: Hooda, Malik. Cont.: 9811374881
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 30/5'4" B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Government Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Family settled at Pinjore. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras:Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 02.09.90) 31/5'5" MBA in International Business from P.U. Chandigarh. Employed as Deputy Collector in Irrigation Department, Haryana in Head office Panchkula. Avoid Gotras:Kadyan, Hooda. Cont.: 9468269712, 9991996899
- SM4 Jat Girl (DOB 16.05.96) 25/4" Master in Economics from P. U. Chandigarh. Lives in Canada. Brother settled in Canada. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Malik, Chahal. Cont.: 9466611197
- SM4 Jat Girl (DOB 04.07.94) 27/5'4" B. Com, M.Com. from MDU Rohtak, B.Ed from Kurukshetra University. Avoid Gotras:Lamba, Sheokand, Beniwal. Cont.: 9416234470.
- SM4 Jat Girl (DOB 13.08.94) 27/5'1" MA (Economics), MA (English), P.G. Diploma in Computer Science from HARTRON. Working as Lecturer in a reputed private school in District Kaithal. Avoid Gotras:Jaglan, Singhmar, Beniwal. Cont.: 9780580317
- SM4 convent educated Jat Girl (DOB 1995) 26/5'2" B. Tech.from PEC Chandigarh. Working in MNC. Avoid Gotras:Jaglan, Rathi. Cont.: 9417133975, 7889278091
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.90) 31/5'2" Master in Pharmacy. Employed as teacher in Diploma College. Father retired from HES-II, Mother housewife. Avoid Gotras: Goyat, Dhankhar, Balhara, Kadyan. Cont.: 9996956282
- SM4 Jat Girl (DOB 25.01. 97) 24/5'6" M.Sc. (Chemistry) B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Sheoran, Sohlat, Thakan. Cont.: 9888518198
- SM4 Jat Boy (DOB 11.05.81) 41/5'11" B.Sc., MBA (IT). Working in MNC at Gurugram with Rs. with Rs. 15+ Lakh PA. Father retire class-1 officer. Mother housewife. Family residing in Faridabad. Avoid Gotras:Deswal, Dahiya. Cont.: 9466629799, 9255525099
- SM4 Jat Boy (DOB 09.06. 93) 28/5'8" U.G. (English Hons.) Diploma in Civil Engineering. Serving in Indian Air Force. Father retired Kanungo. Mother housewife. Avoid Gotras:Rathee, Jhanjhariya, Rohz, Direct Ahlawat. Cont.: 9992075101
- SM4 Jat Boy (DOB 20.04.91) 31/5'9" B. Tech. Computer Science. Own Business: SPARROW GG SOLUTIONS_OPS Private Limited with Rs. 8 lakh income PA. Mother in Haryana Government Service. Avoid Gotras:Kadyan, Ahlawat, Dagar. Cont.: 9876855880
- SM4 Jat Boy (DOB14.03.95) 27/5'10 M.A. (English). Employed in M. C. Chandigarh as Clerk on contract basis. Own house at Panchkula. Avoid Gotras:Sangwan, Jakhar, Pachar. Cont.: 9463961502
- SM4 Jat Boy (DOB Oct. 99) 22/5'9. Only son. B.Tech. (NIT). Working as 1st Engineer in Cadance Americy Company Pune with Rs. 16 lakh package PA. Avoid Gotras:Gehlawat, Sangwan, Phogat. Cont.: 9466709254
- SM4 Jat Boy (DOB 02.11.93) 28/5'9" LLB from Delhi University. Practising as Advocate in Punjab & Haryana High Court. Parents in Government job. Own house at Panchkula and Chandigarh. Avoid Gotras:Joon, Dahiya, Dalal. Cont.: 9466767399
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.94) 27/5'8" B.A. LLB from P.U. Chandigarh. Father retired HAS II. Avoid Gotras:Balyan, Deswal, Pannu, direct Duhan, Ahlawat. Cont.: 9216886705, 7355555667
- SM4 Jat Boy (DOB 02.07.93) 28/5'3" B.Tech. (Mechanical) from Kurukshetra University. Working in MNC Gurugram with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras:Bamal, Dhankhar, Sesma. Cont.: 9728481938
- SM4 convent educated Jat Boy 30/6'1". Employed as officer in Government job in Australia and own house in Australia. Father and Mother retired class-II officers from Haryana Government. Family settled at Yamuna Nagar. Avoid Gotras: Sheoran, Chahal, Dhanda. Cont.: 9518680167, 9416036007.
- SM4 Jat Boy (DOB15.08.93)28/6'2" Employed in Government job at Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Avoid Gotras:Punia, Mann, Sheoran, Phor. Cont.: 9466217701
- SM4 Jat Boy (DOB 01.03.93) 28/5'11" B.A., LLB, LLM Working as Legal Consultant in Law Firm at Chandigarh with Rs. 30000 PM. Father Class-I officer retired. Mother housewife. Family residence at Panchkula and Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia. Cont.: 9876155702
- SM4 Jat Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, GITOT Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Cont.: 9416152842
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lakh PA. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras:Jatyan, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 31/6'1" B. Tech from P. U. Chandigarh (UIET). Employed as Inspector CBI. Father retired class-I officer. Mother housewife. Elder brother in Government job. Eleven acre agriculture land. Family settled at Zirakpur. Preferred working match in Centre/State Govt. job. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 9023492179, 7837551914

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर-3, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932, 2641127

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।